

卐 श्रीमद्राघवो विजयते 卐

धर्मचक्रवर्ती, महामहोपाध्याय, जीवनपर्यन्त कुलाधिपति, वाचस्पति, महाकवि  
श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज  
का राष्ट्रीय, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक चेतना का संवाहक

# श्रीतुलसीपीठसौरभ

( मासिक पत्र )

सीतारामपदाम्बुजभक्तिं भारतभविष्यं जनतैक्यम्।  
वितरतु दिशिदिशि शान्तिं श्रीतुलसीपीठसौरभं भव्यम्॥

वर्ष १३	अप्रैल २००९ (४, ५ मई को प्रेषित)	अंक-८
<b>संस्थापक-संरक्षक</b> श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज <b>संरक्षक एवं प्रकाशक</b> डॉ० कु० गीता देवी ( पूज्या बुआ जी ) प्रबन्धन्यासी, श्रीतुलसीपीठ सेवान्यास, चित्रकूट <b>सम्पादक</b> आचार्य दिवाकर शर्मा 220 के, रामनगर, गाजियाबाद-201001 दूरभाष-0120-2712786, मो०- 09971527545 <b>सहसम्पादक</b> डा० सुरेन्द्र शर्मा 'सुशील' डी-255, गोविन्दपुरम्, गाजियाबाद-201001 दूरभाष : 0120-2767255, मो०-09868932755 <b>प्रबन्ध सम्पादक</b> श्री ललिता प्रसाद बड़धवाल सी-295, लोहियानगर, गाजियाबाद-201001 0120-2756891, मो०- 09810949921 <b>सहयोगी मण्डल</b> (ये सभी पद अवैतनिक हैं) डा० श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव, 09971149779 श्री दिनेश कुमार गौतम, 09868977989 श्री सत्येन्द्र शर्मा एडवोकेट, 09810719379 श्री अरविन्द गर्ग सी.ए., 09810131338 श्री सर्वेश कुमार गर्ग, 09810025852 डॉ० देवकराम शर्मा, 09811032029	<b>पूज्यपाद जगद्गुरु जी के सम्पर्क सूत्र :</b> श्रीतुलसीपीठ, आमोदवन, पो० नया गाँव श्रीचित्रकूटधाम (सतना) म०प्र०485331 0-07670-265478, 05198- 224413 <b>वसिष्ठायनम्</b> - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य मार्ग रानी गली नं०-1, भूपतवाला, हरिद्वार (उत्तरांचल) दूरभाष-01334-260323 <b>श्री गीता ज्ञान मन्दिर</b> भक्तिनगर सर्कल, राजकोट (गुजरात) दूरभाष-0281-2364465 <b>पंजीकृत सम्पादकीय कार्यालय एवं पत्र व्यवहार का पता</b> आचार्य दिवाकर शर्मा, 220 के., रामनगर, गाजियाबाद-201001 दूरभाष-0120-2712786, मो०- 09971527545	

## रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले

### विषयानुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
१.	सम्पादकीय	-	३
२.	वाल्मीकिरामायण सुधा (४८)	पूज्यपाद जगद्गुरु जी	४
३.	श्रीमद्भगवद्गीता (७९)	पूज्यपाद जगद्गुरु जी	८
४.	भई प्रगट किशोरी	पूज्यपाद जगद्गुरु जी	१०
५.	भगवती श्रीसीता जी की आरती	प्रणता-पूज्यपाद जगद्गुरु जी	१५
६.	उठ पड़ो हे! राम वंशज	विष्णु गुप्त 'विजिगीषु'	१६
७.	सिया स्वामिनी हैं.....	सन्तशिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज	१६
८.	श्री राधागोविन्द विवाह महोत्सव	-	१७
९.	शिखा की वैज्ञानिकता का रहस्य	पूज्यपाद पं० दीनानाथ शास्त्री सारस्वत	१८
१०.	श्रीचित्रकूट धाम में अनुपम रामकथा	प्रस्तुति-आचार्य दिवाकर शर्मा	२२
११.	भगवान् के श्री चरणों में अनुरक्ति ही भक्ति है	श्री ललिताप्रसाद बड़थवाल	२६
१२.	सीताचरित्रम्	आचार्य पं० रमेशचन्द्र शुक्ल	२७
१३.	प्रकट भई सीता	श्री विशेषनारायण मिश्र (संगीत प्रवक्ता)	२७
१४.	मुस्कनियाँ पै बलिहारी जाऊँ मैं	डॉ० श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव	२८
१५.	सिख-गुरुओं की श्रीराम-श्रीकृष्ण भक्ति	श्री जगदीश प्रसाद गुप्त (जयपुर)	२९
१६.	पूज्यपाद जगद्गुरु जी के आगामी कार्यक्रम	प्रस्तुति- पूज्या बुआ जी	३१
१७.	व्रतोत्सवतिथिनिर्णयपत्रक	-	३२

### सुधी पाठकों से विनम्र निवेदन

- ‘श्रीतुलसीपीठसौरभ’ का प्रत्येक अंक प्रत्येक दशा और परिस्थिति में प्रत्येक महीने की ४ तथा ५ तारीख को डाक से प्रेषित किया जाता है। पत्रिका में छपे महीने का अंक आगामी महीने में ही आपको प्राप्त होगा।
- ‘श्रीतुलसीपीठ सौरभ’ मंगाने हेतु बैंक ड्राफ्ट ‘श्रीतुलसीपीठसौरभ’ के नाम से ही बनवाएँ तथा प्रेषित लिफाफे के ऊपर हमारा नाम तथा पूरा पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें। मनीआर्डर पर हमारा नाम-पता ही लिखें प्रधान सम्पादक अथवा प्रबन्ध सम्पादक कभी न लिखें।
- पत्रव्यवहार करते समय अथवा ड्राफ्ट-मनीआर्डर भेजते समय अपनी वह ग्राहक संख्या अवश्य लिखें जो पत्रिका के लिफाफे के ऊपर आपके नाम से पहले लिखी है।
- ‘श्रीतुलसीपीठसौरभ’ में **‘पूज्यपाद जगद्गुरु जी’** से अभिप्राय धर्मचक्रवर्ती श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज समझा जाए।
- ‘श्रीतुलसीपीठ सौरभ’ में प्रकाशित लेख/कविता/अथवा अन्य सामग्री के लिए लेखक/कवि अथवा प्रेषक महानुभाव ही उत्तरदायी होंगे, सम्पादक मण्डल नहीं।
- ‘श्रीतुलसीपीठसौरभ’ प्राप्त न होने पर हमें पत्र लिखें अथवा फोन करें। हम यद्यपि दूसरी बार पुनः भेजेंगे। किन्तु अपने डाकखाने से भलीप्रकार पूछताछ करके ही हमें सूचित करें।
- डाक की घोर अव्यवस्था के चलते हमें दोषी न समझें। हमें और आपको इसी परिस्थिति में **‘पूज्यपाद जगद्गुरु जी’** का कृपा प्रसाद शिरोधार्य करना है।
- सुधी पाठक अपने लेख/कविता आदि स्पष्ट अक्षरों में लिखकर भेजें। यथासमय-यथासम्भव हम प्रकाशित करेंगे। अप्रकाशित लेखों को लौटाने की हमारी व्यवस्था नहीं है।

#### सदस्यता सहयोग राशि

संरक्षक	११,०००/-
आजीवन	५,१००/-
पन्द्रह वर्षीय	१,०००/-
वार्षिक	१००/-

-सम्पादकमण्डल

श्रीतुलसीपीठ सेवान्यास, चित्रकूट के स्वामित्व में मुद्रक तथा प्रकाशक डॉ० कु० गीतादेवी (प्रबन्धन्यासी) ने श्री राघव प्रिंटर्स, जी-१७ तिरुपति प्लाजा, बेगम पुल रोड, बच्चापार्क, मेरठ, फोन (का०) 4002639, मो०-9319974969, से मुद्रित कराकर कार्यालय २२० के., रामनगर, गाजियाबाद से प्रकाशित किया।

## सम्पादकीय-

## जनकसुता जग जननि जानकी

अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक, जनसुखदायक, राजिवनयन धरे धनुसायक, परिपूर्णतम परात्पर परब्रह्म परमेश्वर भगवान् श्रीमद्राघवेन्द्र सरकार के वामभाग में सुशोभित जनकनन्दिनी, रघुकुलचन्दिनी, भावते भैया भक्तभरतवन्दिनी सकल अधगज्जिनी भगवती श्रीसीता जी प्राणिमात्र पर नित्य अकारणकरुणा करती ही रहती हैं। उनकी ही कृपा कादम्बिनी से जीवात्मा अपने परमात्मा को प्राप्त करता है। जिस प्रकार करुणामयी माता अपने शिशु को स्वच्छ करके उसके पिता की गोद में बैठाकर उसकी मनोहारी चेष्टाओं को देखकर आनन्दित होती है उसी प्रकार जनकसुता जगजननी जानकी जी अपने लाड़ले भक्तों एवं सन्तों के जन्म जन्मान्तर के कलिमलों को धोकर स्वच्छ करके अपने स्वामी एवं परमपिता परमेश्वर श्री राघवेन्द्र सरकार की गोद में बैठाकर प्रमुदित होती रहती हैं। भगवती और भगवान् की इसी करुणागङ्गा में अनन्तानन्त प्राणी अपना अभ्युदय प्राप्त करते हैं। माता की ममता में आकण्ठनिमग्न प्रेमी भक्त जब जब भगवती जनकनन्दिनी जी की लीलाओं का स्मरण तथा दर्शन करते हैं तब तब अश्रुपूर्ण होकर अपना जीवन सार्थक एवं धन्य करते हैं। वेदादिधर्म शास्त्रों से लेकर लोकप्रसिद्ध सत्साहित्य तक सभी ने शक्तितत्व का चिन्तन मनन करते समय भगवती श्रीसीताजी का इस तथ्य के साथ स्मरण अवश्य किया है कि भारतीय किंवा वैदिक धर्म की मर्यादा के पोषण के लिए जो जानकी माता बन बन डोलीं तथा आदर्श धर्मपत्नी का उदाहरण प्रस्तुत करते समय जिनका पावन नाम सर्वोपरि गिना जाता है उनका भक्तजनमानस सदैव कृतज्ञ है। उनके पावनचरित का स्मरण करते हुए आदिकवि महर्षि वाल्मीकि जी ने सत्य ही कहा है- “सीतायाश्चरितं महत्”। भगवती सीता जी के पावन चरित के उत्कर्ष की गाथा अनेक ऋषि मुनियों, आचार्यों-कवियों सन्तों एवं प्रेमसरसिक महानुभावों ने अपने ग्रन्थों एवं पन्थों में गाई हैं।

सौभाग्य से वैशाखमास के शुक्लपक्ष में नवमी तिथि को धराधाम पर अवतरित भगवती श्रीसीता जी की जयन्ती धार्मिक क्षेत्रों में मनाई जाती है। जिस व्यक्ति या समाज को जितनी जानकीकृपा प्राप्त है उसके द्वारा उतनी ही तन्मयता से इस शुभदिन पर आनन्द सुख एवं सन्तोष प्राप्त होता है ऐसा तथ्य प्रेमानुरागी भक्तजन अनुभव करते हैं।

हम सब श्रीराघव परिवार के सदस्य एवं अपने सद्गुरुदेव पूज्यपाद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज के कृपाभाजन लाखों-करोड़ों की संख्या में अपने-अपने नित्य-नैमित्तिक सत्कर्मों में अपने ज्येष्ठगुरु भ्राता श्रीमद्राघवेन्द्र सरकार के वामभाग में विराजमान (हमारी भाभी माँ) भगवती श्रीसीताजी के श्रीचरणों में सादर सश्रद्ध नमन करते हुए यही प्रार्थना करते हैं- हे भगवती भाभी माँ! भवाटवी में भटके हुए हम सब प्राणियों पर अपनी कृपा वर्षा कीजिए। हे क्षमापुत्रि! इनके अनन्तानन्त अपराधों को क्षमा करते हुए आप इनका हाथ अनाथों के नाथ जगन्नाथ रघुनाथ जी के हाथ में थमा दीजिए। हम सब आपको अपनी ममतामयी माँ जानकर ही ऐसी प्रार्थना कर रहे हैं। हमें आशा और विश्वास है कि आप कृपा करेंगी ही।

आचार्य दिवाकर शर्मा

प्रधान सम्पादक

## वाल्मीकिरामायण सुधा ( ४८ )

(गतांक से आगे)

□ धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर  
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज

श्रीराघव कहते हैं- लक्ष्मण !

अनया चित्रया वाचा त्रिस्थान व्यंजनस्थया।

कस्य नाराध्यते चित्तमुद्यतासेररेरपि।।

हनुमान जी महाराज इतना मधुर बोलते हैं कि तीनों स्थानों पर इनका व्यंजन स्पष्ट होता है हृदय, कण्ठ और मूर्धा। तीनों सकारों के उच्चारण में लोग प्रायः अशुद्धि करते हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश में तो भगवान और भी कृपा करें। स और श का अन्तर ही बहुत से लोग समझ नहीं पाते। इसी प्रकार व और ब का अन्तर लोग नहीं समझ पाते। हनुमानजी की बात सुनकर भगवान बहुत प्रसन्न हो रहे हैं। हनुमान जी इतना सुन्दर बोल रहे हैं कि कोई तलवार लेकर इनको मारने को उद्यत हो पर इनकी भाषा सुनते ही तलवार नीचे गिर जायेगी और शत्रु का हृदय भी बदल जायेगा। हमारे छावनी के महाराज जी भी बहुत सुन्दर बोलते हैं। आज मधुर वचन बोलने वाले साधु नहीं दीख रहे हैं। कभी कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि सारी कटुता इन्हीं की जीभ पर आ गई है। गोस्वामी जी महाराज उत्तरकाण्ड में लिखते हैं-

शम दम नियम नीति नहिं डोलहिं।

परुष वचन कबहूँ नहिं बोलहिं।।

साधु को तो मधुर बोलना चाहिए, प्रेम से कार्य करना चाहिए। मधुर बनो-

साधु भया तो क्या भया जो नहिं बोल बिचार।

हतै पराई आतमा लिए जीभ तलवार।।

ऐसा नहीं होना चाहिए। वाणी बहुत मधुर होनी चाहिए-  
केयूराणि न भूषयन्ति पुष्पं हारा न चन्द्रोज्ज्वला।  
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः।  
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।

क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग् भूषणं भूषणम्।

केयूर (बाजूबन्द) पुरुष की शोभा नहीं बढ़ाते न चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार, न स्नान, न चन्दनादि लेपन, न पुष्प, न सजे हुए केश। केवल सुसंस्कृत वाणी ही पुरुष को अलंकृत करती है। आभूषण तो नष्ट हो जाते हैं किन्तु वाणी का भूषण ही सच्चा आभूषण है। गले में तो तुलसीमाला धारण करनी चाहिए-

यज्ञोपवीतवद्धार्या गले तुलसिमालिका।

क्षणार्थं तद् विहीनोऽपि रामद्रोहीति कथ्यते।।

जैसे यज्ञोपवीत अनिवार्य है उसी प्रकार गले में कण्ठी अनिवार्य है। एक क्षण के लिए भी यदि कण्ठी गले से गई तो व्यक्ति राम का द्रोही माना जाता है। जो रामजी का द्रोही होगा वह-

शंकर सहस विष्णु अज तोही।

राखि न सकई राम कर द्रोही।।

हनुमान जी महाराज का परिचय जानकर श्रीराम लक्ष्मण ने सीताजी के हरण का समाचार हनुमान जी को सुनाया। तब हनुमानजी ने कहा कि यहाँ ऋष्यमूक पर्वत पर वानरराज सुग्रीव रहते हैं आप उनसे मैत्री करें वे आपकी सहायता करेंगे। तब हनुमान जी-

भिक्षुरूपं परित्यज्य वानरं रूपमाश्रितः।

पृष्ठमारोप्य तौ वीरौ जगाम कपिकुंजरः।।

यहाँ 'जगाम' क्रिया का प्रयोग महर्षि ने किया है। जगाम का अर्थ है 'परोक्षे लिट्' अर्थात् परोक्ष में लिट् लकार हुआ है। यह ठीक है क्योंकि जब हनुमान जी ने रामजी और लक्ष्मणजी को पीठ पर बिठाया और लेकर चले तो उनके शरीर से इतना तेज निकला कि मेरी आँखें बन्द हो गईं तब मेरे लिए परोक्ष हो

गया। पढ़ते दोनों लोग हैं भगवद्भक्त भी पढ़ते हैं और साधारण लोग भी पढ़ते हैं और लोग विद्या का प्रयोग करते हैं दूसरों को अपमानित करने के लिए और हम लोग विद्या का प्रयोग भगवत्प्रेम के लिए करते हैं। हमने जो सूत्र कण्ठस्थ किये हैं वे इसलिए किये हैं कि ये सूत्र रामप्रेम के साधक बनेंगे। अतः इतना अधिक प्रकाश एक तो भगवान श्रीराम का प्रकाश श्री लक्ष्मण जी का प्रकाश और करोड़ों सूर्यों के समान हनुमान जी का प्रकाश जो 'स्वर्णशैल संकाश' है और श्रीराम-

मरुत कोटि शत विपुल बल रविशत कोटि प्रकाश।  
शशि शत कोटि सुशीतल शमन सकल भव त्रास।।

कितना सुन्दर दृश्य है। हनुमान जी महाराज श्रीराम लक्ष्मण को पीठ पर बिठाकर ले जा रहे हैं देवता आकाश से फूल बरसा रहे हैं। जय जयकार हो रहा है बोलो वीर बजरंग बली की जय। यह सौभाग्य किसी को नहीं मिला।

वीर हनुमाना अति बलवाना राम नाम रसिया हो।

प्रभु मन बसिया हो

अंजनि के बारे सिया के दुलारे राम नाम रसिया हो।

प्रभु मन बसिया हो

झूम झूम आये प्रभु मन भाये सन्त मन भाये  
चित्त को चुराये वो तो सन्तन दुराये  
पीठ पै बिठाके, अति छवि छाके  
लखन के भैया हो राम रघुरैया हो। वीर हनुमाना...  
बार बार निरखें अति मन हरषें  
सुमन सुर बरसैं सब अति हरषें  
राम रघुवीरा अति रणधीरा भरतजी के भैया हो  
सीताजी के सैंया हो। वीर हनुमाना...  
प्रभु जी को लाये कपि मन भाये  
राम को बिठाए हृदय चुराये  
अंजनि के छैया कपि मन भैया

सन्त सुख दैया हो सब सुख दैया हो।

वीर हनुमाना अति बलवाना.....

सन्तो! मुझे यह दृश्य पूर्ण प्रत्यक्ष हो रहा है। केवल छूना शेष है। धीरे धीरे जिस प्रकार वायुयान उड़ता है उसी प्रकार हमार हनुमनउ आकाश मार्ग से जा रहे हैं। हे बजरंगबली! हे वीराग्रगण्य। हे राजाधिराज महाराज भूपाल चक्रवर्ती चक्रचूड़ामणे! हे अयोध्याधिपति सम्राट् आपकी जय हो। पूरा वातावरण रसमय हो गया। गोस्वामिपाद वर्णन करते हैं-

एहि विधि सकल कथा समुझाई।

लिए दुऔ जन पीठ चढ़ाई।।

जब सुग्रीव राम कहँ देखा।

अतिशय जन्म धन्य करि लेखा।।

आज सूर्य के पुत्र ने सूर्य के सूर्य को देखा, धन्य हो गया। ये कौन हैं-

सूर्यस्यापि भवेत्सूर्यो ह्यग्नेरग्निः प्रभोः प्रभुः।

श्रियः श्रीश्च भवेदग्र्या कीर्त्याः कीर्तिः क्षमा क्षमा।।

दैवतं दैवतानां च भूतानां भूतसत्तमः।

सुग्रीव ने आठ विशेषयुक्त आठ व्यक्तित्व देखे राघवेन्द्र जी के। सूर्य के सूर्य को देखा, अग्नि के अग्नि को देखा, प्रभु के श्री प्रभु को देखा, विष्णु के भी विष्णु को श्री की भी श्री देखी, कीर्ति की कीर्ति देखी, क्षमा की क्षमा देखी, देवताओं का भी देवता देखा, भूतों का भूतसत्तम देखा अपहृत पाप्मत्व देखा। भगवान के आठ गुण हैं। अपहृतपाप्मा, विजरो, विमृत्यु विशोको अतिजिधित्सः अविपासः सत्यकामः सत्यसंकल्पः। भगवान सारे पापों के नाशक, वृद्धावस्था से रहित, मरणधर्म से रहित, किसी प्रकार के शोक से रहित, भूख प्यास से रहित, उनकी कामनाएँ सत्य हैं उनके संकल्प सत्य हैं। हनुमान जी ने सुग्रीव को पूरी बात बताई। तब सुग्रीव ने कहा-

रोचते यदि मे सख्यं बाहुरेषः प्रसारितः।

गृह्यतां पाणिना पाणि मर्यादा बध्यतां ध्रुवा।।

सरकार! मैं आपकी मित्रता के योग्य नहीं हूँ।  
आपमें और मुझमें बहुत अन्तर है-

तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी।  
हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुंज हारी॥  
नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मो सो।  
मो समान आरत नहिं आरतिहर तो सो॥  
ब्रह्म तू हौं जीव तू है ठाकुर हौं चरो।  
तात मात गुरु सखा तू सब विधि हितु मेरो।  
तोहि मोहि नाते अनेक मानियै जो भावै।  
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु! चरन सरन पावै।

सरकार! आप वही नाता मानें जिससे मैं आपके चरणों से दूर न हो सकूँ। यदि आपको मेरे साथ मित्रता अच्छी लग रही है तो मैंने हाथ फैला दिया है इस अनाथ का हाथ पकड़ लीजिए। तब हनुमान जी महाराज ने अग्नि को प्रकट किया। मित्रता हो रही है आनन्द हो रहा है। दोनों परिक्रमा कर रहे हैं। हनुमान जी मन्त्र पढ़ रहे हैं- हरि ओं द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषष्वाजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्तयनश्नन्नन्यो अभिचाकषीति। यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै तँ हु देवमात्म बुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये। चारों ओर से पुष्पवर्षा हो रही है। सुग्रीव और भगवान राम दोनों अग्नि की परिक्रमा कर रहे हैं जयजय कार हो रही है देवता चकित हैं क्योंकि ऐसी मित्रता कहीं नहीं देखी।

पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाइ।

चकार सख्यं रामेण प्रीतश्चैवाग्निसाक्षिकम्॥

जैसे विवाह में विधि होती है। पति पत्नी का भारतीय संस्कृति के अनुसार विवाह होता है आज उसी प्रकार भगवान श्रीराम और सुग्रीव में मित्रता हो रही है। हनुमान जी पुरोहित बने हैं। बोले हमको क्या दक्षिणा मिल रही है। भगवान ने कहा हनुमान जी जो आप कहेंगे वही दक्षिणा मिलेगी। दोनों से पूछा दक्षिणा दोगे। सुग्रीव से कहा जब मैं राम जी की सेवा की

छुट्टी माँगूँ तब विरोध मत करना। राम जी से कहा सरकार! आपसे मैं यही दक्षिणा लूँगा कि आपको मैं अपने हृदय में बिठा लेता हूँ।

पवन तनय सन्तन हितकारी।

हृदय विराजत अवध बिहारी॥

दोनों ने मित्रता कर ली। एक साथ टी० वी० का तीन लोगों पर फोकस चल रहा है सीता जी पर, बालि पर और रावण पर तीनों पर ही टी० वी० का फोकस गया एक साथ। तीनों चित्र एक साथ आये। महर्षि वाल्मीकि जी के शब्दों में सुनिये-

सीता कपीन्द्र क्षणदाचराणां

राजीव हेम ज्वलतोपमानि।

सुग्रीव राम प्रणय प्रसंगे

वामानि नेत्राणि समं स्फुरन्ति॥

यह इन्द्रवज्रा छन्द है। सीता जी, रावण और बालि तीनों के बायें नेत्र उसी समय फड़क रहे हैं जब श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता हो रही है। तीनों नेत्रों में अन्तर क्या है? सीताजी का नेत्र राजीव (लाल कमल) के समान है। बालि का नेत्र सोने के समान है और रावण का नेत्र अंगार के समान है। देवता जय जयकार कर रहे हैं। वीर हनुमान जी महाराज की जय। आगे चलकर हनुमान जी को लक्ष्मण जी को जिलाने का विरुद प्राप्त होगा-

लाय सजीवन लखन जियाए।

श्रीरघुवीर हरषि उर लाये॥

संजीवनी लाकर मैं लक्ष्मण जी को जिलाऊँगा सरकार। जो जिलाता है वह किसी को मारता नहीं है। हनुमान जी के बारह नाम हैं-

हनूमानंजना सूनूर्वायुपुत्रो महाबलः।

रामेष्टः फाल्गुनिसखः पिंगाक्षो ऽमितविक्रमः॥

उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः।

लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा॥



इनमें ग्यारहवाँ नाम लक्ष्मण प्राणदाता है। यह ग्यारहवाँ क्यों है? क्योंकि हनुमान जी ग्यारह रुद्रमय हैं और हनुमान जी की कृपा से लक्ष्मण जी के प्राण बचे थे। वहाँ ११वीं चौपाई है-

लाय सजीवन लखन जियाए.....

वाल्मीकि रामायण में भी लक्ष्मण जी को जिलाने का वर्णन है। तुलसीकृत में तो दो बार जिलाया है और यहाँ एक बार जिलाया है। रावण के द्वारा शक्ति फैंके जाने पर लक्ष्मण जी को मूर्च्छा हुई, प्राणान्त होने की स्थिति आई फिर हनुमान जी संजीवनी ले आये। आइये हनुमान जी का नामस्मरण करें-

जय हनुमान जय जय हनुमान।

संकटमोचन कृपा निधान।

राम के दुलरुवा जय हनुमान।

सीताजी के बबुआ जय हनुमान।

लाज के रखैया जय हनुमान।

संकट हरैया जय हनुमान।

हाथ में लड्डू मुख में राम।

हृदय विराजे सीताराम।

जय सियाराम जै जै हनुमान।

श्रीगुरु रामानन्द भगवान।

कल हमने निवेदन किया था कि-

ज्यों केले के पात पात में पात।

त्यों वाल्मीकि की बात बात में बात।।

पीठ पर बिठाने का औचित्य यह था कि श्रीराम और लक्ष्मण जी सोच रहे थे कि दोनों को अलग अलग कन्धे पर बैठाने पर हम दूर हो जायेंगे और बानर है न जाने क्या हो जाय। इसीलिए राम लक्ष्मण जी बैठने से पूर्व चिन्तित थे। हनुमान जी उनकी चिन्ता को समझ गये और दोनों एक साथ रहें इसीलिए उनको पीठ पर बिठाया। हनुमान जी श्रीराम से निवेदन करते हैं कि सरकार! कलियुगी मापदण्ड के अनुसार

यह जगत एक प्रकार का सिनेमा है। जगत का स्थान पिक्चर हाल है। एक बार हमने भी सिनेमा देखा। जब हम बाल्यकाल में थे तब पहली बार फार्म भरने के लिए हम जौनपुर आये। उस समय एक फिल्म लगी थी सम्पूर्ण रामायण। हमने अपने पिता जी से कहा हम भी सम्पूर्ण रामायण देखेंगे। पिता जी ने कहा चलो चलते हैं यह १९६६ की बात है। हमको बड़ा उत्साह था। थियेटर हाल में सबके साथ हम भी बैठे थे। हमारे सामने ही एक गँवार हाथ में लाठी लेकर बैठा था। उसने भी टिकिट खरीदा था उसे कौन रोकता। कथा प्रसंग में जब रावण सीता का हरण करके ले जाने लगा। सीता जी रो रही थीं बचाओ बचाओ कहकर पुकार रहीं थीं। हा राम, हा लक्ष्मण, हा जटायु कहकर विलाप कर रहीं थीं। इसी समय उस वृद्ध को तरंग आ गई। पहले तो उसने रावण को गरियाना आरम्भ किया। कहने लगा हमारी माँ का हरण कर रहा है। दौड़ा और चिल्लाकर बोला दुष्ट! अभी तुझे बताता हूँ। यह कहते हुए सिनेमा के पर्दे में लट्ट मार दिया और पर्दा फट गया सिनेमा समाप्त हो गया। थियेटर के मालिक ने कहा हम इस व्यक्ति पर मुकदमा करेंगे। हमने कहा- क्या मुकदमा करोगे? वह वृद्ध बोला करले मुकदमा। मेरी माँ का हरण हो और मैं चुप बैठा रहूँ यह नहीं हो सकता। उस समय मेरे मन में जो विचार आये उन विचारों को मैं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसका अर्थ है कि मैंने गलत सिनेमा नहीं देखा था। आप एक कल्पना करो कि संसार एक सिनेमा है। सिनेमा का चार प्रकार का टिकिट होता है- एक थर्ड क्लास, एक सैकिण्ड, एक फर्स्ट और एक बालकनी का होता है। जो जितना कम पैसा देता है वह पर्दे के अधिक निकट बैठता है।

क्रमशः.....

## श्रीमद्भगवद्गीता ( ७९ )

( गतांक से आगे )

( विशिष्टाद्वैतपरक श्रीराघवकृपाभाष्य )

भाष्यकार-धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर  
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज

अथ चतुर्थोऽध्यायः

मंगलाचरण

सुमत्यखिलवन्दितप्रणतपादपाथोरुहः

पुरन्दरपुराङ्गणाभणितभूतिभौम्यंगनः।

नवीनधनसुन्दरो भुजगसहोदरो भूधरो

दयागुणगणाकरो विजयते रघूणां पतिः॥

**व्याख्या-** सुन्दर बुद्धि वाले अनेक देवताओं द्वारा वन्दित ब्रह्मादि भी जिनके श्रीचरण पर प्रणत होते तथा इन्द्रलोक की अप्सरायें भी जिनके ऐश्वर्य का गान करती हैं। ऐसी पृथ्वीपुत्री सीता जिनकी धर्मपत्नी हैं जो नवीन बादल के समान सुन्दर हैं ऐसे शेषावतार श्रीलक्ष्मण के बड़े भ्राता पृथ्वी को धारण करने वाले दया प्रमुख दिव्य कल्याण गुण-गणों की खान के स्वरूप रघुपति भगवान् श्रीराम की जय हो।

सुहृच्चतुर्थस्य हरंश्चतुर्थम्

धरंश्चतुर्थीद्युतिमच्चतुर्थः।

चतुर्थचिन्त्यः सुतभूश्चतुर्थः

श्रुतश्चतुर्थो जयताच्चतुर्थः॥

**सामान्यार्थ-** अपने चतुर्थ मित्र अर्जुन के 'चतुर्थ' अर्थात् मोह का हरण करते हुए 'चतुर्थी' अर्थात् कालिन्दी की शोभा को धारण करते हुए तथा चतुर्थ मोक्ष को भी जिनके चरणों में भक्त निछावर कर देते हैं, ऐसे चित्त में चिन्तनीय अनिरुद्ध के पितामह गीताजी के चतुर्थ अध्याय में चर्चित तुरीय चैतन्य भगवान् श्रीकृष्ण की जय हो।

**व्याख्या-** यह छन्द कूट है। भगवान् श्रीकृष्ण के मुख्य-चार सखा प्रसिद्ध हैं श्रीदामा, सुदामा, उद्धव

और अर्जुन। उनमें से अर्जुन चौथे हैं। मोह को विकारों में चौथा स्थान प्राप्त है। काम, क्रोध, लोभ, मोह। भगवान् की पत्नियों में यमुनाजी का स्थान चौथा है। और उन्हीं की नीली शोभा को भगवान् अपने श्री विग्रह में धारण करते हैं। भावुकजन प्रभु के चरणों में पुरुषार्थों में चतुर्थ अर्थात् मोक्ष को भी न्यौछावर कर देते हैं। भगवान् का मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त इनमें अन्तःकरणों में से चतुर्थ अर्थात् चित्त में चिन्तन किया जाता है। भगवान् के वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध इन चार व्यूहों में चतुर्थ श्री और अनिरुद्ध ही जिनके सुतभू अर्थात् पौत्र हैं। ऐसे इस चतुर्थ अध्याय में चर्चित चतुर्थ अर्थात् विश्वतेजस् प्राग् परमेश्वर इनमें से चतुर्थ अर्थात् परब्रह्म परमेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की जय हो।

प्रतिज्ञा भाष्यम्

श्री गीतायाश्चतुर्थोऽयमध्यायः कृपया हरेः

श्रीराघव कृपाभाष्यललाम्ना मण्ड्यते मया॥

**व्याख्या-** अब श्रीगीता जी का चतुर्थ अध्याय अर्थात् मेरे यानी जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य के द्वारा श्रीराघवकृपाभाष्यम् नामक रत्न से समलंकृत किया जा रहा है।

**संगति-** अब प्रपन्नचिन्तामणि भगवान् श्रीकृष्ण के साक्षात् मुख कमल से प्रकट हुई भगवत् स्वरूप श्रीमद्भगवद्गीता के चतुर्थ अध्याय के व्याख्यान का चतुर न होते हुए भी कुशल मुझ रामभद्राचार्य द्वारा उपक्रम किया जा रहा है। पूर्व के दो अध्यायों में



भगवान ने ज्ञानमार्गियों के लिए ज्ञानयोग एवं भक्ति युक्त मन वाले मृदु चित्त महानुभावों के लिए कर्मयोग गीता-२/३९ के विभाग के अनुसार पृथक्-२ कहे गये। वास्तव में तो कर्मयोग और ज्ञानयोग ये दोनों साधन कोटि में हैं। इन दोनों की साध्य भगवती भक्ति का भगवान् ने प्रथमा विभक्ति में निष्ठा के नाम से संकीर्तन किया है। द्विविधा निष्ठा। ज्ञानयोग और कर्मयोग की भगवान् ने ज्ञानयोगेन, करणयोगेन कहकर करणतृतीयान्त से चर्चा की है। किन्तु साध्य की पर्यालोचना में इन दोनों के साध्यरूप में एक मात्र भगवान् ही साध्य हैं ऐसा निश्चय होने पर इन दोनों को पृथक् कहने वाले बालक कहकर भगवान् के द्वारा ही निन्दित किये गये। इन दोनों की यही विशेषता है कि इनमें से एक की भी साधना करता हुआ साधक दोनों का फल पा लेता है। अर्थात् गीता ५/४ के अनुसार कर्मयोग से ज्ञानयोग की ओर ज्ञानयोग से कर्मयोग की निष्ठा प्राप्त हो जाती है। इसीलिए इन दोनों को इस एक अध्याय में कहने की इच्छा करते हुए भगवान् पूर्वोक्त योग की परम्परा और उसके सम्प्रदाय वंश की स्तुति करते हैं-

श्रीभगवानुवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।

तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव॥४।१

रा०कृ०भा० सामान्यार्थ- भगवान श्रीकृष्ण बोले-

व्याख्या- हे अर्जुन! मैं अर्थात् भगवान् कृष्ण ने इस अविनाशी योग को विवस्वान भगवान् सूर्य से कहा था और विवस्वान सूर्य ने अपने पुत्र मनु से कहा और मनु ने अयोध्याके आदि महाराज इक्ष्वाकु से कहा अब योग की परम्परा कहते हैं। विशिष्टं वसु यस्मिन्: स विवस्वान् अर्थात् जिनके मण्डल में

श्रीसीताराम जी निवास करते हैं ऐसे सूर्यनारायण को विवस्वान् कहा जाता है।

संगति- इसप्रकार मुझसे प्रारम्भ होकर इक्ष्वाकु राजा पर्यन्त यह गुरु परम्परा अविच्छिन्न क्रम से चली फिर अस्पष्ट हो गयी यही बात अग्रिम श्लोक में कहते हैं।

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे।

तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमप्नुयाम्॥४।२

रा० कृ० भा० सामान्यार्थ- हे शत्रुनाशक अर्जुन! इस प्रकार परम्परा से प्राप्त इस योग को राजर्षि अर्थात् मनुवंश, ऐलवंश, इक्ष्वाकुवंश, तथा नाभागदेश के राजाओं ने जाना इसके अनन्तर विशाल कालखण्ड बीत जाने से यह योग लुप्त हो गया अर्थात् इसकी परम्परा विच्छिन्न हो गयी।

व्याख्या- परम्परा प्राप्त का अर्थ है कि अब इसकी गुरु परम्परा कहना कठिन होगा। यहाँ राजर्षि शब्द पारिभाषिक है। जैसे ब्रह्माण्ड पुराण में कहा गया है-

मानवे चैव ये वंशे ऐलवंशे च ये नृपाः।

ये च ऐक्ष्वाकनाभागा ज्ञेया राजर्षयस्तु ते॥

‘योगो नष्टः’ इसके पश्चात् ही गुरु परम्परा नहीं मिलती क्योंकि अट्टाईस चतुर्युगियों का अन्तराल हो गया अतः यह नष्ट हो गया। अब यहाँ शंका होती है कि भगवान् श्री कृष्ण ने इसको अभी-अभी अव्यय बताया था। प्रोक्तवान् अव्ययं तो फिर अभी नष्ट कैसे कह रहे हैं। अविनाशी का विनाश कैसा? इसका उत्तर है कि यहाँ ‘णस्’ धातु अदर्शनार्थक है विनाशार्थक नहीं। अर्थात् यह अब दिखाई नहीं पड़ रहा है। इसीलिए ८/१४ में भगवान् कहते हैं अनन्य चित्त से स्मरण करने के लिए मैं अदृश्य नहीं होता॥श्री॥

क्रमशः.....

(श्री जानकी जयन्ती पर विशेष)

**भई प्रगट किशोरी**

□ पूज्यपाद जगद्गुरु जी

नाम तिरीहुति धाम सुहावन  
 पावन देशन में सिर मौरा।  
 भारत भाग बिभाग मनोहर  
 कल्प लता कर मानहुँ बौरा।।  
 'गिरिधर' स्वामिनि लागि बिरंचि  
 रची रुचि राखत है जन कौरा।  
 जानकी जन्म मही जग जानत  
 सीतामढ़ी शुभ गाँव पुनौरा।।

कुमुदिनी टीका- तिरहुत नाम का यह प्रदेश सुन्दर और पवित्र धाम है। यह सभी देशों का मुकुटमणि है। भारत भूमि का सौभाग्यपूर्ण यह भूखण्ड मानो कल्पवृक्ष की आम लता का बौर ही है। इसको ब्रह्मा जी ने गिरिधर कवि की स्वामिनी भगवती सीता जी के प्राकट्य के लिए विशेष रूप से बनाया। सभी जनकपुर निवासी इसकी सम्हाल करते रहते हैं और इसकी शोभा का रक्षण करते रहते हैं। सारा संसार जानता है कि आज के परिप्रेक्ष्य में भारत के बिहार प्रदेश में सीतामढ़ी जनपद का यह पुनौरा गाँव ही श्रीसीता जी का जन्म स्थल है। इसे पहले पुण्यारण्य भी कहते थे।

नन्दन कानन पादप पूगनि  
 घेरि रहे करि शीतल ठौरा।  
 जाकर भाग सराहत चाहत  
 शेष-महेश भए मति बौरा।।  
 जीवन मूरि ज्यों पालत लालत  
 प्रानहुँ ते जोगवैं जन कौरा।

'गिरिधर' स्वामिनि जन्मस्थली बन्धो  
 भूतल पुण्य को पुंज पुनौरा।।  
 कुमुदिनी टीका- जिस पुनौरा ग्राम को नन्दन वन के वृक्षों के समूह चारों ओर से घेरकर शीतल स्थान बनाते रहते हैं और जिसके भाग्य की सराहना करते हुए उसे चाहते हुए शेष और शिव बुद्धि के बावले हो चुके हैं, उसे जनकनगर निवासी प्राण से भी प्रिय मानकर संजीवनी बूटी की भाँति सम्हालते, दुलारते और पालते हैं। पृथ्वी के पुण्य पुंज के समान यही पुनौरा गिरिधर कवि की स्वामिनी भगवती सीता जी की प्राकट्य स्थली का सौभाग्य पा गया और सीता जन्मस्थली बन गया।

मास बैसाख अजोरोड़ पाख  
 सुमंगल बार मनोहरताई।  
 पुण्य अभीजित औ नवमी तिथि  
 मध्य दिनेश सबै सुखदाई।।  
 उच्च परे ग्रह पाँच सुसाँच  
 अनूपम जोग दशा छबि छाई।  
 जन्म घरी जग मंगल मूल सो  
 'गिरिधर' स्वामिनि की चलि आई।।

कुमुदिनी टीका- बैसाख मास, शुक्ल पक्ष सुन्दर मंगलवार की मनोहरता, अभीजित मूर्त, नवमी तिथि, सबको सुख देने वाले मध्याह्न के सूर्य सुन्दर लग रहे हैं। इसी प्रकार श्रीराम जन्म के ही समान सीता जी के भी जन्मकाल में पाँचों ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर विराज रहे हैं और सुन्दर योग

तथा अनुपम दशा सुहावनी छवि छहरा रही है। गिरिधर कवि की स्वामिनी सीता जी की प्राकट्य की बेला संसार के मंगलों का मूल बनकर स्वयं चली आई है।

बानी पयोधिजा पारबती  
सुरराज प्रिया मिलि मंगल गाई।  
साजि सुमंगल कंचन थारन  
कुंजर मुक्तन चौक पुराई॥  
बन्दनवार सँवारि भली बिधि  
भूरि उमंग ते गाँव सजाई।  
'गिरिधर' स्वामिनि जन्म बिलोकन  
साज बिमान पुनौरहिं आई॥

कुमुदिनी टीका- सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, शची मिलकर जन्म कालीन मंगल गीत गानें लगीं। स्वर्ण के थालों में मंगल सजाकर गजमुक्ता के सुन्दर चौक पुराए। भली प्रकार से बन्दनवार बनाकर अत्यन्त प्रसन्नता से पुनौरा गाँव सजाया और गिरिधर कवि की स्वामिनी सीताजी का जन्मोत्सव देखने के लिये विमानों को सजाकर पुनौरा गाँव पधार आई।

अनपति अनपति कुपति बिमलमति  
सोम जाग जजन करन मन दए हैं।  
पतिनी सहित हित सोमलता बोड़वे के  
पुण्य पुंज पुरुष पुनौरा गाँव गए हैं॥  
याज्ञवल्क्य शतानन्द आदि महिसुर वान  
निगदित जनक कनक हर लाए हैं।  
'गिरिधर' प्रभु प्रिया अवनि सो धन काज  
सीरकेतु मनहुँ द्वितीय ब्यूह भए हैं॥

कुमुदिनी टीका- अनपति अर्थात् निःसंतान, अन्नों के पति पृथ्वी के वास्तविक पति निर्मल मति

वाले श्रीजनक जी ने सोम यज्ञ का यजन करने के लिये मन बनाया और पुण्यवान पुरुषों को साथ लेकर सोमलता बोने के लिये अपनी पत्नी के साथ पुनौरा गाँव गए। याज्ञवल्क्य, शतानन्द आदि ब्राह्मण गुरुजनों की सम्मति से क्षेत्र शोधन करने के लिये जनक जी ने सोने का हल हाथ में ले लिया। गिरिधर कवि के प्रभु श्रीराम की प्राण प्रिया सीता जी जो खजाने के रूप में पृथ्वी में छिपी हुई हैं, के लिये सीरध्वज राजा मानो द्वितीय व्यूह अर्थात् संकर्षण ही हो गये हैं।

सजल नयन गदगदित बयन तन  
पुलकित जनक कनक हर करषत।  
अनदत अवनि रवनि भव भवनि  
निरखि नरपति सुख सहपति तरसत॥  
निरभय जय जय कहत लहत रय  
सुरगन कमन सुमन बहु बरसत।  
निरतत बिबुध रमनि नभतल महँ  
लखि लखि कवि गिरिधर हँसि हरषत॥

कुमुदिनी टीका- अब जनक जी के हल चलाने की झाँकी का वर्णन करते हुये महाकवि चित्रशैली में कहते हैं कि राजा जनक नेत्रों में आँसू भरकर गदगदित वाणी और पुलकित शरीर होकर सोमलता का बीज बोने के लिये पुनौरा की पावन भूमि में सोने का हल चलाते हुए खींच रहे हैं, उनके इस कार्य से प्रसन्न होकर जनक जी की पृथ्वीरूपिणी पत्नी आनंदित हो रही हैं और महाराज जनक का सुख देखकर भगवान शंकर की धर्मपत्नी पार्वती जी अपने प्राणपति शिव जी के साथ हर्षित हो रही हैं। देवतागण भक्ति रस प्राप्त करते हुए निर्भीक

होकर जय-जयकार कर रहे हैं। और अत्यन्त सुन्दर पुष्पों की वृष्टि कर रहे हैं। इसी प्रकार देवताओं की पत्नियाँ आकाश मंडल में नाच रहीं हैं। यह दृश्य देख-देखकर गिरिधर कवि भी हँस-हँस कर प्रसन्न हो रहे हैं।

**विशेष-** इस घनाक्षरी में एक भी दीर्घ मात्रा नहीं है इसी प्रकार दूसरी किरण की चौथी घनाक्षरी में भी महाकवि ने अदीर्घ मात्रिक प्रयोग किया है।

ब्योम बिमान निसान बजावत  
गावत नाचत हैं सुरराया।  
राजा चलावत आनंद ते हर  
हेरि करें नभ नीरद छाया।।  
शीतल तीनि बयारि बहे  
लहि बारिद बूँद मनोकरि दाया।  
जोहत बाट कबै प्रगटैं  
कवि 'गिरिधर' स्वामिनि श्रीमहामाया।।

**कुमुदिनी टीका-** आकाश ही जिनका विमान है अथवा जिनके विमान आकाश गामी हैं ऐसे देवगण नगारे बजा और गा रहे हैं। देवताओं के राजा इन्द्र नाच रहे हैं। महाराज जनक आनन्द से हल चला रहे हैं यह दृश्य देखकर आकाश में बादल छाया कर रहे हैं मानो महाराज जनक पर दया करके बादलों की बूँद से युक्त शीतल मन्द सुगन्ध बयार चल रही है। सब लोग बाट जोह रहे हैं कि गिरिधर कवि की स्वामिनी महामाया श्रीसीताजी कब प्रगट होंगी? सीता जी के प्रकट होने में अभी कितना समय है?

ज्यों धरनी बर काँध धरे हर  
हेरि मही पर सीर चलाई।  
आगे बढ़ाइके कंचन फार ते

नेकु मनागहिं कीन्हीं हराई।।  
त्यों हल के फल नोंक ते झोंकते  
भूमि सिंहासन में टकराई।  
'गिरिधर' स्वामिनि भामिनि रूप में  
सीता ते सीता तबै प्रगटाई।।

**कुमुदिनी टीका-** पृथ्वी के वास्तविक पति जनक जी ने हल को अपने कन्धे पर रखकर ज्यों ही पृथ्वी पर अपना हल चलाया और थोड़ा सा आगे बढ़ाकर स्वर्ण के फाल से धीरे से थोड़ी सी हराई अर्थात् हल की रेखा बनाई, उसी समय हल के फाल की नोंक से शीघ्रता पूर्वक पृथ्वी सीता जी के अलौकिक सिंहासन से टकरायी और तत्क्षण सीता अर्थात् हल द्वारा कुरेद कर बनायी हुई रेखा से गिरिधर कवि की स्वामिनी सीता जी भामिनी अर्थात् श्रेष्ठ लक्ष्मणों वाली षोडशवर्षीया युवती रूप में पृथ्वी को फाड़कर स्वर्ण सिंहासन पर बैठी हुई ही प्रकट हो गई।

भइ प्रगट किशोरी, धरनि निहोरी,  
जनक नृपति सुखकारी।  
अनुपम बपुधारी, रूप सँवारी,  
आदि शक्ति सुकुमारी।।  
मनि कनक सिंघासन, कृतवर आसन,  
शशि शत शत उजियारी।  
शिर मुकुट बिराजे, भूषन साजे,  
नृप लखि भये सुखारी।।  
सखि आठ सयानी, मन हुलसानी,  
सेवहिं शील सुहाई।  
नरपति बड़भागी, अति अनुरागी,  
अस्तुति कर मन लाई।।

जय जय जय सीते, श्रुतिगन गीते,  
जेहिं शिव शारद गाई।  
सो मम हित करनी, भवभय हरनी,  
प्रगट भई श्री आई।।  
नित रघुवर माया, भुवन निकाया,  
रचइ जासु रुख पाई।  
सोइ अगजग माता, निज जनत्राता,  
प्रगटी मम ढिग आई।।  
कन्या तनु लीजै, अतिसुख दीजै,  
रुचिर रूप सुखदाई।  
शिशु लीला करिये, रुचि अनुसरिये,  
मोरि सुता हरषाई।।  
सुनि भूपति बानी, मन मुसुकानी,  
बनी सुता शिशु सीता।  
तब रोदन ठानी, सुनि हरषानी,  
रानी परम बिनीता।।  
लिये गोद सुनैना, जल भरि नैना,  
नाचत गावत गीता।  
यह सुजस जे गावहिं, श्रीपद पावहिं,  
ते न होहिं भव भीता।।

दोहा-

रामचन्द्र सुख करन हित  
प्रगटी मख महि सीय।  
'गिरिधर' स्वामिनि जग जननि  
चरित करत कमनीय।।

जनकपुर जनक लली जी की जय  
अयोध्या राम जी लला की जय  
कुमुदिनी टीका- अब महाकवि चार चौपाया  
छन्दों और एक दोहे में भगवती सीता जी की प्राकट्य

स्तुति गा रहे हैं। अहो! पृथ्वी को निमित्त मानकर योगिराज जनक जी को सुख देने के लिये भगवती सीताजी किशोरी महिला रूप में प्रकट हो गई। उन्होंने उपमा रहित मनोहर शरीर धारण कर रखा था और वे निरुपम रूप से सँवार सँवार कर सजाई गई थीं अर्थात् पृथ्वी फोड़कर प्रकट श्रीविग्रह पर माटी की एक किनकी भी नहीं लगी थी, उनके श्रीवस्त्रों और आभूषणों पर तनिक भी धूल की मलिनता नहीं दिख रही थी। वे अत्यन्त सुकुमारी दिखती हुई भी आदि शक्ति थीं। भगवती सीता मणियों से जुड़े हुए स्वर्ण के सिंहासन पर श्रेष्ठासन बनाकर अर्थात् सुखासन से विराजमान थीं। उनके गौर शरीर पर करोड़ों-करोड़ों चन्द्रमाओं का प्रकाश था। भगवती जी के सिर पर स्वर्ण मुकुट विराज रहा था। सीता जी के श्रीअंगों में अनेक आभूषण सजे थे जगन्माता को प्रकट हुई देखकर सीरध्वज राजाजनक सुखी हो गए। सीता जी के ही साथ प्रकट हुई चरित्र और स्वभाव से सुन्दरी, चतुर चारुशीला आदि आठ सखियाँ उनकी सेवा कर रही थीं। परम भाग्यशाली महाराज जनक अतिशय अनुराग से पूर्ण होकर मन लगाकर भगवती सीता जी की स्तुति करने लगे। अपने दिव्य विवेक से पृथ्वी फाड़कर आठ सखियों, स्वर्णसिंहासन, पीतकौशेय वस्त्र तथा मुकुट आदि अलंकारों से सुसज्जित होकर स्वयं प्रकट हुईं इन षोडश वर्षीया परम रूपवती किशोरी जी को साकेताधिपति परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीराम की नित्य सहचरी साकेत विहारिणी शाश्वत सीता जानकर जनक जी बोले- वैदिक मन्त्र समूहों द्वारा गायी हुई हे शाश्वती भगवती सीता जी! आपकी जय हो, जय

हो, जय हो। जिन श्रीजी को शिव जी एवं शारदा जी ने गाया वे ही संसार के भय को हरने वाली नित्य साकेत विहारिणी श्रीजी मेरा हित करने के लिये इस मिथिला भूमि में आकर स्वयं प्रकट हुई हैं। जिनका संकेत पाकर रघुवर अर्थात् जीवमात्र के नित वरणीय भगवान श्रीराम की योगमाया निरन्तर अनेक ब्रह्माण्डों की रचना करती रहती है वे ही समस्त जड़ चेतनों की माता एवं अपने भक्तों की रक्षा करने वाली आप श्रीसीता जी मेरे समीप, मेरे हल के फाल से टकरायी हुई भूमि से प्रकट हुई हैं इसीलिये मैं आपका नाम सीता घोषित करता हूँ। हे भगवती यह किशोरी रूप छिपाकर सबको सुख देने वाला सुन्दर बाल रूप स्वीकार करके नवजात कन्या का शरीर धारण कर लीजिये। हम (जनक-सुनयना) दम्पती को अत्यंत सुख दीजिए। प्रसन्न होकर मेरी पुत्री बनकर आप शिशु लीला कीजिये। हम दोनों सुनयना-जनक को माता-पिता बनने का सौभाग्य देकर हमारी रुचि का अनुसरण कीजिये। योगिराज जनक की यह वाणी सुनकर साकेत विहारिणी सीता जी मन में मुस्कुराई और तत्क्षण नवजात कन्या बनकर जनकराज की कन्या बन गई अर्थात् सिंहासन आदि उपकरणों को छिपा दिया। कुछ दिनों के लिये आठों सखियों को भी अन्तर्धान किया और हल रेखा की धूलि और फटी हुई भूमि के गड्ढे से निकलते हुये जल से भीनी हुई नवजात नन्हीं कन्या बनकर जनक जी को दृष्टिगोचर हुई और राजा जनक ने उन्हें गोद में उठा लिया और नन्हीं बेटी का शरीर अपने उत्तरीय से प्रेम के साथ पोंछा। तब सीता जी कहां-कहां करके रोने लगीं। कन्या का रोदन सुनकर परम विनम्र

रानी सुनयना प्रसन्न हो उठीं उनकी आँखों में आँसू भर आए। महारानी नन्हीं बेटी को गोद में लेकर नाचती हुई जन्म के गीत गाने लगीं। भविष्य में भी जो श्रीसीताराम भक्त नर नारी भगवती सीता जी का यह जन्म सुयश गाएँगे वे श्रीसीता जी के श्रीचरणकमल की सेवा प्राप्त कर लेंगे। वे संसार में रहकर भी भवसागर की भयंकर विपत्तियों से भयभीत नहीं होंगे। भगवान श्रीरामचन्द्र का सुख साधन बढ़ाने के लिये ही अर्थात् प्रभु श्रीराम को सुखी करने के लिये भगवती श्रीसीता जी, महाराज जनक की यज्ञभूमि में स्वयं प्रकट हुई। गिरिधर कवि की स्वामिनी प्रभु श्रीराम की सहचरी बनकर लोकोत्तर चमत्कार पूर्ण चरित्र करती आ रही हैं।

रोवत देखि उठाइ हहाई के  
गोद लिये सुता रानी सुनैना।  
पाई मनोनिधि जन्म दरिद्र ने  
मोद भरी पुलकानि सुनैना॥  
आनन चूमि दुलारत बारत  
कंचन मानिक खानि सुनैना।  
'गिरिधर' स्वामिनि की जननी बनि  
आनन्द में हरषानी सुनैना॥

कुमुदिनी टीका- पुत्री सीता जी को रोती देखकर रानी सुनयना ने आनंदित होकर उन्हें गोद में उठा लिया, मानों जन्म के दरिद्र ने अलौकिक निधि पा ली हो। इस अपूर्व लाभ से भरकर सुनयना जी रोमांच संयुक्त हो गई हैं और नवजात पुत्री का मुख चूमकर दुलारती हुई स्वर्ण और मणियों की खानि की निछावर करने लगीं। गिरिधर कवि की स्वामिनी की माँ बनकर सुनयना जी आनन्द से परिपूर्ण हो गईं। ( श्रीसीतारामकेलिकौमुदी से साभार )



## भगवती श्रीसीता जी की आरती

□ प्रणेता-पूज्यपाद जगद्गुरु जी

भइ प्रगट किशोरी, धरनि निहोरी, जनक नृपति सुखकारी।  
 अनुपम बपुधारी, रूप सँवारी, आदि शक्ति सुकुमारी॥  
 मनि कनक सिंघासन, कृतवर आसन, शशि शत शत उजियारी।  
 शिर मुकुट बिराजे, भूषन साजे, नृप लखि भये सुखारी॥  
 सखि आठ सयानी, मन हुलसानी, सेवहिं शील सुहाई।  
 नरपति बड़भागी, अति अनुरागी, अस्तुति कर मन लाई॥  
 जय जय जय सीते, श्रुतिगन गीते, जेहिं शिव शारद गाई।  
 सो मम हित करनी, भवभय हरनी, प्रगट भई श्री आई॥  
 नित रघुवर माया, भुवन निकाया, रचइ जासु रुख पाई।  
 सोइ अगजग माता, निज जनत्राता, प्रगटी मम ढिग आई॥  
 कन्या तनु लीजै, अतिसुख दीजै, रुचिर रूप सुखदाई।  
 शिशु लीला करिये, रुचि अनुसरिये, मोरि सुता हरषाई॥  
 सुनि भूपति बानी, मन मुसुकानी, बनी सुता शिशु सीता।  
 तब रोदन ठानी, सुनि हरषानी, रानी परम बिनीता॥  
 लिये गोद सुनैना, जल भरि नैना, नाचत गावत गीता।  
 यह सुजस जे गावहिं, श्रीपद पावहिं, ते न होहिं भव भीता॥  
 दोहा-

रामचन्द्र सुख करन हित  
 प्रगटी मख महि सीय।  
 'गिरिधर' स्वामिनि जग जननि  
 चरित करत कमनीय॥  
 जनकपुर जनक लली जी की जय  
 अयोध्या राम जी लला की जय

(सभी को यह दिव्य आरती दैनिक पूजा में गानी चाहिए तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करना चाहिए)

□□□

## उठ पड़ो हे! राम वंशज

□ विष्णु गुप्त 'विजिगीषु'

राम सा संकल्प लेकर, अरि असुर अवसान कर।  
धर्म रथ आरुढ़ होकर, जय विजय अभियान कर।।  
हो चुकी शिव साधना, शूल लेकर कर उठें।  
राक्षसी आतंक के सिर, काटने को कर उठें।।  
शौर्य का पर्याय बनना, अब समय की मांग है।  
शक्ति का करना प्रदर्शन, अब समय की मांग है।।  
दैन्यता को तज बड़ो, ललकार कर भारत सपूतो।  
शिंजिनी खींचो, करो प्रतिकार माँ के ओ सपूतो।।  
संगठित कर देव शक्ति, किरन सा अभियान कर।  
धर्म रथ आरुढ़ होकर, जय विजय अभियान कर।।  
युद्ध के ज्वालामुखी को आग बनकर सींचना है।  
आतंक के हर वक्ष पर, सिंह बनकर कूदना है।।  
दुर्बलों की शान्ति ने, कब कहाँ है विजय पाई।  
शस्त्र सज्जित शूर ने ही, जगत में है कीर्ति पाई।।  
दुष्ट-दानव दमन हित, वीर शर सन्धान कर।  
शब्दभेदी वाण से अब, रिपु पुनः प्रियमाण कर।।  
आ रहा है स्वर समर का, उठ मयद टंकार कर।

अरि शून्य कर दो मेदिनी, बड़ प्रखर प्रतिकार कर।।  
आस्था के, धर्म के, श्रद्धा सदन को रौंदते अरि।  
इस सनातन संस्कृति के सत्य-शिव को मेटते अरि।।  
उठ पड़ो हे! राम वंशज, धमनियों का रक्त पिघला।  
तुम्हें करना अरि दमन है, शौर्य का विस्तार दिखला।।  
शान्ति की तेरी पताका, तभी फहरायेगी जगत में।  
विश्व गुरु की दिव्य वाणी, तभी गूँजेगी विश्व में।।  
बड़ चले स्यन्दन समर को, विजय का दिनमान धर।  
राम सा संकल्प लेकर, अरि असुर अवसान कर।।  
शान्ति वचनों से कभी, ज्वाला समर बुझती नहीं।  
शास्त्र पढ़ने से कभी, अरि सैन्य भी रुकती नहीं।।  
देख तेरी आँख के अंगार को अरि दहल जाये।  
और असि की धार से तू शत्रु के मस्तक झुकाये।।  
विश्व की अघ शक्तियों के पंख काटो आज फिर।  
विश्व गुरु का मान देकर, जग पिन्हाये ताज फिर।।  
विजय का यह पर्व पावन, जय विजय का गान कर।  
राम सा संकल्प लेकर, अरि असुर अवसान कर।।

□□□

## सिया स्वामिनी हैं.....

□ सन्तशिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज

सिया स्वामिनी हैं मलकिन हमारी  
फिकर मोहै काहे की।  
सिया स्वामिनि....।  
जिनके ससुर चक्रवर्ती दशरथ  
सासू कौसल्या महतारी।  
फिकर मोहै....।  
देवर भरत लखन रिपुसूदन  
जिनके स्वामी हैं राम धनुर्धारी।  
फिकर मोहै....।

ऋद्धि सिद्धि चरणन की दासी  
जिनके हनुमत हैं प्रेम के भण्डारी।  
फिकर मोहै....।  
तुलसीदास कलजुग का करिहै  
हमें राखि लेहैं जनक दुलारी।  
फिकर मोहै....।

□□□

## श्री राधागोविन्द विवाह महोत्सव

( पूज्यपाद जगद्गुरुजी के संरक्षण में हरिद्वार से ज्वालापुर वरयात्रा पहुँचेगी )

भगवद्भक्त महानुभाव,

आप जानकर अन्यन्त प्रसन्न होंगे कि श्री राघवपरिवार के परमाराध्य पूज्यपाद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज के संरक्षण में तथा पूज्या बुआ जी डा० कुमारी गीतादेवी मिश्रा जी के निर्देशन में ऐतिहासिक ईश्वरीय प्रेरणा से हरिद्वार में गुरुवार 7 जून 2009 को भगवान् श्री राधागोविन्द विवाह महोत्सव सम्पन्न होने जा रहा है। जैसाकि प्रसिद्ध है कि “भक्त और भगवान् के अन्तरंगतम मधुर सम्बन्धों की चर्चा-अर्चा करने वाले भावुक भक्त अपनी हस्ती को भगवत् स्मरण की मस्ती में लुटाकर अपना जीवन धन्य कर लेते हैं”- ऐसे ही भगवच्चरणानुरागी एवं पूज्यपाद जगद्गुरु चरणचञ्चरीक ज्वालापुर हरिद्वार के दो वैष्णव परिवारों ने भगवान् राधागोविन्द का शुभ विवाहोत्सव सम्पन्न कराने का निर्णय लिया है।

उल्लेखनीय है कि भगवती राधा जू के पक्ष (कन्यापक्ष) का प्रतिनिधित्व करेंगे श्रीमती सुमन मंगल एवं श्री प्रवीण मंगल (ज्वालापुर) तथा भगवान् गोविन्द जू के पक्ष (वरपक्ष) का प्रतिनिधित्व करेंगे- श्रीमती सारिका मित्तल एवं श्री राकेश मित्तल (ज्वालापुर)।

5 जून 2009 को कन्यापक्ष वाले (बरसानेवाले) वरपक्ष के स्थान ‘वसिष्ठायनम्’ रानी गली नं० 1 हरिद्वार में सगाई लेकर आयेंगे। 7 जून 2009 को प्रातः 10 बजे वरपक्ष के अनेक महानुभाव भगवान् श्रीकृष्ण के परममित्र एवं अपने सद्गुरुदेव पूज्यपाद जगद्गुरु जी के संरक्षण में शोभायात्रा के साथ ‘बन्धनपैलेस’ रेलवे रोड ज्वालापुर (हरिद्वार) पहुँचेंगे।

सभी भगवत्प्रेमियों से साग्रह अनुरोध है कि भक्त और भगवान् की इस लीला के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त करें। आपको अखण्ड पुण्य तो प्राप्त होगा ही गुरुदेव के दर्शन, गोविन्द के कृपाभाजन, गंगाजी के स्नानध्यान श्री गीताजी के इस वाक्य का अर्थानुसन्धान करने का भी सौभाग्य प्राप्त होगा- “ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्”।

आशा है आप इस महोत्सव में अवश्य उपस्थित होंगे।

निवेदक:-

श्री राघव परिवार

गुरुगोविन्दकृपाभाजन

श्रीमती सुमन मंगल एवं श्री प्रवीण मंगल, ज्वालापुर

(मो०- 09259101699) (कन्यापक्ष)

श्रीमती सारिका मित्तल एवं श्री राकेश मित्तल, ज्वालापुर

फोन- 01334- 253548 मो०- 09897404706 (वरपक्ष)

## संस्कार महिमा ( शिखा की वैज्ञानिकता का रहस्य )

□ पूज्यपाद पं० दीनानाथ शास्त्री सारस्वत

(७) संस्कार का लाभ जगत्प्रसिद्ध है। जब सुवर्ण खान से निकलता है, तो मलिन होता है। खान से निकले हुए सोने का जब तक संस्कार न किया जावे तब तक सुवर्ण सु-वर्ण (अच्छे रंग का) नहीं होता। तब वर्तमान संस्कृत अवस्था के समान उसकी दीप्ति आकृति एवं मूल्य नहीं होते। इसीलिए ही सुवर्ण का संस्कार करके उसे सु-वर्ण किया जाता है। संस्कार के बिना कृत्रिम और अकृत्रिम सोने का परीक्षण भी नहीं हो सकता। संस्कार-द्वारा ही सभी पदार्थ व्यवहारोपयोगी होते हैं। किसी भी वस्तु में दोषनिराकरणपूर्वक गुणों का उत्पन्न करना ही उसका संस्कार कहा जाता है। जब तक किसी भी वस्तु का संस्कार नहीं होता, तब तक वह सदोष और गुणहीन रहती है। संस्कार होने पर ही उसके दोष दूर होकर गुणों का अविर्भाव हो जाता है। हीरे को जब तक शान में नहीं खरादा जाता, तब तक हीरे का न तो मिट्टी का आवरण दूर होता है न ही उसमें चमक आती है। इस प्रकार शाणसंस्कार के बिना तलवार की न धार तेज होती है, न ही उसमें काटने की शक्ति आती है। जब ये वस्तुएँ शान पर चढ़ाई जाती हैं, और इनका संस्कार किया जाता है तभी उनके उक्त दोष दूर होकर उक्त गुण प्रकट होते हैं। जड़ वस्तु की तरह घोड़ा आदि चेतन पदार्थों के भी दोष दूर करने और गुणों के उत्पन्न करने के लिए संस्कार अपेक्षित होता है।

फलतः सांसारिक सब पदार्थों को यदि उपयोगी करना इष्ट हो तो उस समय संस्कार की अपेक्षा होती है। इस प्रकार की कोई वस्तु जगत् में नहीं मिलती, जिसका कार्योपयोग के लिए संस्कार न किया जाता हो। इस प्रकार संस्कार से ही मनुष्य का भी दृष्ट अदृष्ट मल धुलता है। संस्कार से ही मनुष्य के स्वरूप का यथार्थ प्रकाश होता है। संस्कार से ही मनुष्यता आती है। संस्कारों से ही मनुष्य के पाप दूर होते हैं। 'मनुस्मृति' में कहा है- 'गार्भैर्होमैर्जातकर्म-चौडमौञ्जीनिबन्धनैः। वैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते' (२/२७) 'वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम् च कार्यः शरीर-संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च (२/२६) वहां पर चूडाकर्म आदि संस्कारों से बीज वा गर्भ-सम्बन्धी पाप का दूर होना तथा शरीर का पवित्र होना कहा है। यह संस्कार की महिमा है।

### शिखा में प्रमाण

(८) शास्त्रों में संस्कार सोलह कहे गये हैं। इस विषय में 'षोडश-संस्काररहस्य' आगे देखिये। उनमें आठवां संस्कार "चूडाकर्म" है। इस संस्कार में बालक का सिर भद्र कर अर्थात् उसके गर्भ से आये बालों का मुण्डन करके चूडा (शिखा) रखनी पड़ती है। यह संस्कार भी महत्वपूर्ण माना जाता है। यह संस्कार हिन्दुत्व का प्रथम सोपान है। श्री मनु ने कहा है- 'चूडाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः। प्रथमेन्दे तृतीये वा कर्त्तव्यं श्रुतिनोदनात्' (२-३५) यहाँ पर 'श्रुतिनोदना'

से चूडाकरण-शिखास्थापन कहा है। श्रुति मन्त्र ब्राह्मणात्मक वेद को कहते हैं। इस विषय में अन्य पुष्प में कहा जायगा। कुछ चतुर्थ पुष्प में देखिये। उसमें मन्त्रभाग का लिङ्ग है- 'यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव' (यजुर्वेद वा० सं० १७/४८) यहां 'विशिखाः' का अर्थ है- 'विशिष्टा दीर्घा, गोखुर परिमाण, शिखा-चूडा येषां तादृशाः कुमारा इव'। इस मन्त्र में 'शिखा' का मूल दीख रहा है।

अब इस विषय में दूसरा मन्त्र भी द्रष्टव्य है- 'आत्मन्नुपस्थे न वृकस्व लोभ, मुखे दमश्रूणि न व्याघ्रलोम। केशा न शीर्षन् यशसे, श्रियै शिखा सिंहस्य लोम त्विषिरिन्द्रियाणि' (यजु० १९/९२) यहाँ पर श्री-प्राप्त्यर्थ शिखा का धारण कहा है, और शिखा के बालों को सिंह के लोम के स्थानापन्न कहा है। अब शिखा के विषय में ब्राह्मण-भाग का प्रमाण देखिये- 'अथापि ब्राह्मणम्-रिक्तो वा एषोनपिहितो वन्मुण्डः, तस्य एतद् अपिधानं यत्शिखा-इति' (आपस्तम्बधर्मसूत्र १/१०/८) यहां शिखारहित को रिक्त-श्री-हीन दिखाया गया है। तब शिखा का स्थापन आयु, बल, तेज तथा वृद्धि का सहायक सिद्ध हुआ।

इस प्रकार अन्य शास्त्रों ने भी शिखा की आवश्यकता तथा शिखा-छेदन में प्रायश्चित्तार्हता कही है। जैसे कि- 'कात्यायनस्मृति' में कहा है- 'सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च। विशिखो व्युपवीतिश्च यत् करोति न तत् कृतम्' (१/४) यहाँ पर शिखा ही इनके कृत्य को अकृत्य बतलाया है। 'लघुहारीतस्मृति' में कहा है- 'शिखां छिन्दन्ति ये केचिद् वैराग्याद् वैरतोपि वा। पुनः संस्कारमर्हन्ति त्रयो वर्णा

द्विजातयः (१८) मोहाच्छिन्दन्ति ये केचिद् द्विजातिनां शिखां नराः। चरेयुस्ते दुरात्मानः प्राजापत्यं विशुद्ध्ये॥ (१९) इस प्रकार 'स्त्री-शूद्रौ तु शिखां छित्वा क्रोधाद् वैराग्यतोपि वा। प्राजापत्यं प्रकुर्यातां निष्कृतिर्नान्यथा भवेत्' (लघुहारीतस्मृति २०) 'खल्वाटत्वादोषेण विशिखश्चेन्नरो भवेत्। कौशीं तदा धारयीत ब्रह्म-ग्रन्थियुतां शिखाम्' (संस्कार-भास्कर) इन प्रमाणों से शिखा का रखना आवश्यक सिद्ध होता है। न होने पर कुशा की शिखा रखना कहा गया है। अन्य शास्त्रों में भी शिखा का वर्णन आता है। इस प्रकार शिखा न केवल हिन्दुत्व का चिन्ह है, बल्कि कर्म का अङ्ग भी है। शिखा के बिना मनुष्य वैदिक कर्म में अधिकार प्राप्त नहीं कर सकता। इसी कारण वैदिक यज्ञों में खल्वाट पुरुष को कर्माधिकारी नहीं माना जाता, अथवा वहाँ पर उस पुरुष की विवशता विचार कर कुश की शिखा बनानी पड़ती है। इस प्रकार शिखा केवल हिन्दुत्व का चिन्ह नहीं, अन्यथा ज्ञानकाण्ड के अधिकारी संन्यासी हिन्दुओं में न गिने जाते, अतः शिखा हिन्दु-कर्मकाण्ड का अङ्ग भी है।

### शिखारहस्य

(९) यजुर्वेदीय 'तैत्तिरीय उपनिषद् की शिक्षावल्ली में कहा गया है- 'अन्तरेण तालुके य एष स्तन इव अवलम्बते, सा इन्द्रयोनिः, यत्र केशान्ते विवर्तते व्यपोह्य शीर्षकपाले' (१/६/१) तालु के मध्य में स्तन की तरह जो केशराजि दीखती है- इसमें केशों का मूल है। वहाँ सिरके दोनों कपालों का भेदन करके इन्द्रयोनि है, इन्द्र अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति का भाग सुषुम्णा नाड़ी है।

आशय यह है कि- जैसे घट दो कपालों के संयोग से बनता है, वैसे सिर भी दो कपालों से बना है। दोनों कपालों के मूल को भेदकर सुषुम्णा नाम नाड़ी रहती है। दोनों कपालों का मूलस्थान सुषुम्णा नाड़ी का घर है। योगी लोग इडा एवं पिङ्गला नाड़ी की गति को पार करके सुषुम्णा को जगाया करते हैं; उसी से आत्मा का साक्षात्कार करते हैं। यह नाड़ी अपने मूलस्थान से होती हुई मस्तक के मध्य में विचरती है। योगी लोग जिस स्थान को सुषुम्णा का मूलस्थान मानते हैं; वैद्य लोग उसी स्थान को 'मस्तुलिङ्ग' नाम से बुलाते हैं। मस्तुलिङ्ग के निम्न भाग को योगी लोग 'ब्रह्मरन्ध्र' कहते हैं, और वैद्यगण उसके साथ के भाग को 'मस्तिष्क' कहते हैं।

वैद्य लोगों का यह अभिप्राय है कि- सम्पूर्ण शरीर में प्रधान अङ्ग है सिर, अथवा यह कहना चाहिये कि- व्यष्टि ब्रह्माण्डरूप शरीर की शक्तियों का भण्डार सिर है। सब शरीर में व्याप्त नस-नाड़ियों का सिर से सम्बन्ध है। मनुष्य जीवन का केन्द्र वा आधार भी सिर ही है। सिर में दो शक्तियाँ रहती हैं; एक ज्ञान-शक्ति, दूसरी कर्म-शक्ति। इन दोनों शक्तियों की परम्परा नाड़ी-द्वारा शरीर में व्याप्त हो जाती है; और कार्यरूप में परिणत हो जाया करती है। इसी कारण शरीर में ज्ञान और कर्म दो विभाग हैं। इन दोनों विभागों का मूलस्थान वही सुषुम्णा का मूलस्थान और ब्रह्मरन्ध्र है अर्थात् मस्तुलिङ्ग तथा मस्तिष्क है। मस्तुलिङ्ग कर्मशक्ति का भण्डार है और मस्तिष्क ज्ञान शक्ति का। मस्तिष्क के साथ आंख, कान, नासिका, रसना, त्वचा इन ज्ञानेन्द्रियों का सम्बन्ध है, और मस्तुलिङ्ग के साथ वाणी, हाथ, पैर, गुद, उपस्थ इन कर्मेन्द्रियों

का सम्बन्ध है। मस्तिष्क एवं मस्तुलिङ्ग का सामर्थ्य वा स्वास्थ्य जितनी अधिकता से होगा, ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रियों में भी उतनी प्रबलता सम्पन्न होगी। उन दोनों स्थलों के अस्वास्थ्य से इन इन्द्रियों में भी विकृति होती है। इसमें उदाहरणों की कमी नहीं है।

प्रकृति की विलक्षण महिमा से इन दोनों स्थलों की प्रकृति भी भिन्न-भिन्न हुआ करती है। मस्तिष्क शैत्य को चाहता है, मस्तुलिङ्ग उष्णता को। मस्तिष्क की ठंडक के लिए तालु-प्रदेश में और (हजामत) करवानी पड़ती है। उसमें शैत्यार्थ छुरे से वहां के केश, पान के आकार से कटवाये जाते हैं; उस पर तेल, साबुन, दही, मलाई आदि का उपयोग किया जाता है, तालु को जल-वायु आदि से ठण्डा रखना पड़ता है। सिरदर्द होने पर तालु के बाल कटवाने वा मुंडवाने से वेदना शान्त हो जाती है। फलतः तालु-प्रदेशस्थ मस्तिष्क तो ठण्डक चाहता है; उससे भिन्न धर्मवाला मस्तुलिङ्ग गर्मी चाहता है।

अब प्रश्न यह है कि- मस्तुलिङ्ग में कितनी वा कैसी ऊष्मा (गर्मी) अपेक्षित है। ऊष्मा की न्यूनाधिकता से नाड़ियों में प्रकोप हो सकता है, और उससे कई हानियाँ हो सकती हैं; इस कारण उसमें मध्यम ऊष्मा चाहिये। ऊष्मा से ही यह हमारा शरीर है, ऊष्मा गई तो शरीर भी शान्त हुआ। मर जाने पर कहते हैं कि ठण्डा हो गया। एक अमेरिकन वैज्ञानिक विद्वान ने वक्तव्य दिया है कि यदि हमारी ऊष्मा सुरक्षित रहे; तो हमारी ४०० वर्ष की आयु भी हो सकती है। सो उस ऊष्मा के संरक्षण में शिखा भी एक उपाय है। वह ऊष्मा कपड़े आदि से नहीं हो सकती; क्योंकि कपड़े आदि के गुण अनेक प्रकार के होते हैं। अतः उनसे पूर्ण लाभ की सम्भावना नहीं हो सकती।



यह भी निश्चित बात है कि जो वस्तु जिससे उत्पन्न होती है, वही उसकी वास्तविक सहायक हुआ करती है। जैसे- घड़ा मिट्टी से बनता है, उसके प्रत्येक अवयव की पूर्ति भी मिट्टी से ही होती है, जल अग्नि आदि से नहीं। मस्तुलिङ्ग सिर का एक भाग है, उसकी रक्षा भी सिर से उत्पन्न पदार्थ द्वारा ही हो सकती है, टोपी-हैट आदि से नहीं। शिर से उत्पन्न पदार्थ बाल है; अतः वहाँ घनीभूत गोरखपरिमाण के बाल ही मध्यम परिमाण की गर्मी कर सकते हैं; अन्य वस्तु नहीं। गंजापन जितने अंश में होता है; उतना ही अंश चोटी का होती है। इस स्थान पर लम्बे बाल रखना ही गंजेपन का इलाज है।

यह पहले कहा जा चुका है कि मस्तिष्क में ठण्डक अपेक्षित है और मस्तुलिङ्ग में गर्मी। इसलिए मस्तिष्क की ठण्डक के लिए वहाँ तालु-प्रदेश में केश थोड़े अपेक्षित होते हैं; अतः लोग वहाँ पर अपने बाल कम करा देते हैं; या वहाँ छुरे से क्षौर करवा लेते हैं, पर स्त्रियों में सौभाग्य के कारण न तो उनका क्षौर होता है; न वहाँ के बाल कटाये जाते हैं; तब उनके मस्तिष्क को वायु कैसे लगे; इसके लिए हमारे पूर्वजों ने उनके लिए माँग (सीमंत) रखना नियत किया है। दो भागों में बाल हो जाने से मध्य में माँग की रेखा होती है; वह मस्तिष्क का स्थान होने से उस रेखा के द्वारा उनके तालु को वायु लगती रहने से मस्तिष्क में ठण्डक रहती है; पर मस्तुलिङ्ग गर्मी के लिए उस पर घनीभूत के केशों की आवश्यकता होती है। मुनियों ने वहाँ उपयुक्त गर्मी के लिए गोखुर के परिमाण के केश माने हैं। इसलिए मस्तुलिङ्ग में गहरे केश सदा

रहें; वे अन्य बालों से अधिक रहें, भिन्न रहें, ऊंचे रहे, इसलिए उनका नाम भी विशेष रखा गया है “शिखा”; और उसका सम्बन्ध कर्म-प्रवर्तक धर्म के साथ स्वीकृत किया गया है। इसके अतिरिक्त सन्ध्या आदि के अवसर पर परमात्मा की कृपा भी शिखा के ही द्वारा भीतर प्राप्त होती है; इसी कारण ‘तैत्तिरीयोपनिषत्’ ने उस स्थान का नाम ‘इन्द्रयोनि’ कहा है यह पहले कहा ही जा चुका है। ‘ब्रह्मरन्ध्र’ भी इसे इसलिए कहते हैं। जैसे ब्राडकास्ट किया हुआ शब्द सारे आकाश में व्याप्त हो जाता है- पर उसका आकर्षण करता है रेडियो-यन्त्र। और रेडियो का तरीका यह है कि मकान की चोटी पर एक बाँस तार के साथ खड़ी की जाती है; वही चोटी की तार शब्द को खँच लेती है; जिसे हमारा रेडियो-यन्त्र खँचकर हमारे आगे उपस्थित कर देता है, इसी प्रकार चोटी के बाल भी परमात्मा की व्यापक कृपा को अपने में आकृष्ट कर लेते हैं।

यह विषय कृत्रिम भी नहीं है, किन्तु वास्तविक और प्राकृतिक है। आप मस्तुलिङ्ग परके केशों को कटवाने वाले पुरुषों को देखें- वहाँ पर गोलाकार मण्डल दीख रहा होता है। एक भाग में बालों की ऐसी रचना दीखती है, जिससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह कपाल की ग्रन्थि है। ग्रन्थिस्थल को मर्मस्थल भी कहा जाता है। प्रत्येक मर्मस्थल की रक्षा भी आवश्यक हुआ करती है। अन्य मर्मस्थलों की अपेक्षा यह मर्मस्थल सम्राट्-स्थानीय है, क्योंकि यही सब नस-नाड़ियों का केन्द्र है। इसकी रक्षा अधिकता से हो; अतः यहाँ शिखा अवश्य रखनी चाहिये। इसी घनीभूत शिखा से ही सनस्ट्रोक आदि की आशङ्का भी नहीं रह जाती। □□□

## श्रीचित्रकूट धाम में अनुपम रामकथा

□ प्रस्तुति-आचार्य दिवाकर शर्मा

आज समाज में ऐसी भ्रान्ति फैली हुई है कि महाराज दशरथ कामी थे। कुछ कथावाचक भी समाज में ऐसा दुष्प्रचार कर रहे हैं। पूज्यपाद जगद्गुरु जी ने इन चैत्र के नवरात्रों में इस मिथ्या प्रचार का मुँहतोड़ उत्तर दिया है।  
-सम्पादक

मंगलाचरण के पश्चात् कथा प्रारम्भ करते हुए पूज्यपाद जगद्गुरु जी ने कहा कि आज श्रीचित्रकूट बिहारी बिहारिणी जू हनुमान जी, कामदगिरि भगवान तथा शुभकृत् मुझे एक पावन चरित्र सुनाने का संकेत किया है। वे अपने ससुर महाराज श्रीदशरथ जी का चरित्र सुनने को उत्कण्ठित हैं। पुरुष वर्ग में दशरथ जी ही ऐसे महापुरुष हैं जिन्होंने सीता जी को दो बार गोद में बैठाया। गोस्वामी जी महाराज ने श्रीमानस जी में लिखा है-

लिए गोद करि मोद समेता।  
को कहि सकइ भयउ सुख जेता॥  
बधू सप्रेम गोद बैठारी।  
बार बार हिय हरषि दुलारी॥

इसी प्रकार श्रीराम लक्ष्मण सीता जी के वनवास में जाने से पूर्व महाराज दशरथ ने-

तब नृप सीय लाइ उर लीनी।  
अति हित बहुत भाँति सुख दीन्ही॥

जिस पुत्रवधू को चक्रवर्ती महाराज का इतना दुलार प्राप्त हो ऐसे पुण्यश्लोक ससुर का चरित्र हम हृदयंगम करने का प्रयास करें। अवधी में एक दोहा प्रसिद्ध है-

राम राम सब कोउ कहैं दशरथ कहै न कोय।  
एक बार दशरथ कहै जन्म कोटि फल होय॥  
साधारण जन के लिए इस दोहे का अर्थ कठिन है। यहाँ दशरथ शब्द के दो अर्थ हैं। एक तो दशरथ पुत्र राम और दूसरे निर्गुण निराकार राम जिनके विषय में कहा गया है-

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि।

इति राम पदेनासौ परब्रह्माभिधीयते॥

जो महात्मा कबीर या सन्त मलूकदास के राम हैं वे निर्गुण ब्रह्म राम हमारा कल्याण नहीं कर सकते। हमारी आँखों में तो श्रीराम का यह स्वरूप होना चाहिए-

पुनि मन वचन कर्म रघुनायक।

चरण कमल बन्दउँ सब लायक॥

राजिव नयन धरे धनु सायक।

भगत बिपति भंजन सुखदायक॥

हमें तो मन वचन कर्म से सम्पूर्ण जीवों के स्वामी रघूणां नायकः रघुनायकः के चरण कमलों की वन्दना करनी चाहिए। महर्षि वाल्मीकि ने भी श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में वर्णन किया है-

प्रविश्य तु महारण्यं रामो राजीवलोचनः।

विराधं राक्षसं हत्वा शरभंगं ददर्श ह॥

हमें ऐसे दशरथपुत्र राम चाहिए जो दुष्टों का दमन कर सकें भारत को आतंकवाद से मुक्त कर सकें। मुनि नारद जी ने महर्षि वाल्मीकि जी से जब पूछा कि श्रीराम का कौन सा अंग सबसे सुन्दर है तब महर्षि के शब्दों में महाराज दशरथ ने कहा-

ऊनषोडशवर्षोऽयं रामो राजीवलोचनः।

अर्थात् राजीव नयन (रक्तनयन) राम ही सबसे सुन्दर लगते हैं।

गोस्वामी जी महाराज भी कवितावली में वर्णन करते हैं-

कीर के कागर ज्यों नृपचीर विभूषन उष्म अंगनि पाई।  
राजिव लोचन राम चले तजि बापु को राज बटाउ की नाई।।

ऐसा दशरथ पुत्र राम चाहिए। भगवान राम ने निर्णय ले लिया है कि अब दुष्टों को दण्ड देना है।

अतः-

राजिव नयन धरे धनुसायक।

भगत बिपति भंजन सुखदायक।।

हम जब तक दशरथ पुत्र राम की अवधारणा नहीं करेंगे तब तक हमारी रक्षा नहीं होगी। ऐसे सारे संसार के पिता भगवान राम जिस जीवात्मा (महाराज दशरथ) को पिता कह रहे हैं क्या वे कामी होंगे? गीतावली में श्रीभरत से भगवान राम ने कहा है कि भरत! तुम जानते हो कि मेरा यह शरीर चिन्मय है फिर भी इस शरीर की जूती बना लूँ तब भी मैं पिता जी से उच्छ्रण नहीं हो सकता। ऐसे श्रीराम जहाँ होंगे क्या वहाँ काम सम्भव है?

जहाँ राम तहाँ काम नहीं जहाँ काम तहाँ राम।

तुलसी नहीं दोऊ रहें रवि रजनी इक ठाम।।

भगवान शंकर को भी जब हृदय में राम को लाना पड़ा तभी उन्होंने तीसरा नेत्र खोला-

तब शिव तीसर नयन उघारा।

चितवत काम भयो जरि खारा।।

महाराज दशरथ एक क्षण भी श्रीराम को देखे बिना नहीं रह सकते। जन्म से ही २४ मिनट सन्ध्यावन्दन के लिए श्रीराम से अलग होते हैं शेष समय श्रीराम के अपने पास ही रखते हैं। तभी तो गोस्वामी जी ने कहा-

मंगल भवन अमंगल हारी।

द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी।।

महाराज दशरथ ऐसे जीवात्मा हैं जिनके पास दश लक्षणों वाला रथ है। मनु महाराज के धर्म के दस लक्षण कहे हैं-

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

जहाँ काम होगा वहाँ ये दश लक्षण नहीं होंगे। महाराज दशरथ में धर्म के दसों लक्षण हैं अतः वहाँ काम की सम्भावना नहीं की जा सकती। वैसे हम साधारण साधु भी कभी काम की चर्चा नहीं करते तो महाराज दशरथ की तो बात ही क्या है। तभी तो गोस्वामी जी महाराज कहते हैं-

दशरथ गुन गन बरनि न जाहीं।

अधिक कहा जेहि सम जग नाहीं।।

मुनि भरद्वाज जी भी महाराज दशरथ की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं-

जासु सनेह सकोच बस राम प्रगट भए आइ।

जे हर हिय नयननि कबहुँ निरखे नाहिं अघाइ।।

अर्थात् जिनके प्रेम और संकोच (शील) के वश में होकर वे सच्चिदानंद घन भगवान श्रीराम आकर प्रकट हुए जिन्हें महादेव जी अपने हृदय के नेत्रों से देखते हुए कभी नहीं अघाते अर्थात् कभी तृप्त नहीं होते ऐसे श्रीराम के पिता महाराज दशरथ कदापि कामी नहीं हैं। महाराज दशरथ के जीवन के विषय में गोस्वामी जी महाराज दोहावली में कितना सुन्दर कहते हैं-

जीवन मरन सुनाम जैसे दशरथ राय को।

जियत खिलाये राम राम बिरह तनु परिहरेउ।।

अर्थात् महाराज दशरथ का जीवन और मरण दोनों प्रशंसनीय हैं। महाराज दशरथ जब तक जीवित

रहे श्रीराम को खिलाया और रामजी के वियोग में शरीर को त्याग दिया। भरद्वाज जी कहते हैं कि राम दशरथ जी से संकोच क्यों करते हैं? कौन सी ऐसी घटना या समस्या है जिसका समाधान राम जी नहीं कर पाये। पूर्वजन्म में मनु शतरूपा के रूप में मनु जी महाराज ने जब भगवान ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी से वरदान नहीं लिया छः बार ब्रह्माजी सात बार विष्णु भगवान और दस बार शिव जी वरदान देने आये तो मनुशतरूपा ने उन्हें लौटा दिया। वरदान माँगा तो परब्रह्म परमात्मा श्रीराम से। इतने प्रेम से प्रभु ने किसी को वरदान भी नहीं दिया होगा। जब भगवान श्रीराम ने कहा जो आप चाहेंगे वही वरदान मैं दूँगा। तब मनु महाराज ने कहा-

दानि सिरमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाव।

चाहउँ तुमहिं समान सुत प्रभु सन कवन दुराव।।

संसार में भगवान के समान कोई हो ही नहीं सकता। तब भगवान ने कहा-

आप सरिस खोजौं कहँ जाई।

नृप तव तनय होब मैं आई।।

व्यक्ति संकोच उससे करता है जिससे दबता है। ज्ञानी के भगवान स्वतंत्र होते हैं परन्तु भक्त के भगवान परतन्त्र होते हैं। मनु के समक्ष भगवान कृतज्ञ हैं तभी तो-

बोले कृपा निधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि।

माँगहु वर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि।।

मनु टाल रहे हैं कहते हैं-

नाथ देखि पदकमल तुम्हारे।

अब पूरे सब काम हमारे।।

फिर भी भगवान माँगने को कहते हैं। मनु फिर टाल रहे हैं-

सो तुम जानहु अन्तरजामी।

पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी।।

मनु जी कहते हैं आप सब कुछ जानते हैं फिर मुझसे क्यों जानना चाह रहे हैं। यदि सुनना ही चाहते हैं तो 'चाहउँ तुमहिं समान सुत' मैं तो आपके समान पुत्र चाहता हूँ। भगवान ने कहा मैं अपने समान कहाँ खोजने जाऊँगा मैं ही आपका पुत्र बनकर आऊँगा। ऐसे मनु जिन्होंने सहस्रों वर्ष तप कर भगवान को पुत्ररूप में प्राप्त करने का वरदान प्राप्त किया अगले जन्म में महाराज दशरथ बने। ऐसे महापुरुष क्या कामी होंगे? परमपूज्य गुरुदेव ने इस प्रसंग में आगे कहा कि प्रेम दो प्रकार का होता है सत्य प्रेम और असत्य प्रेम। असत्य प्रेम वह है जहाँ प्रेम करने वाला व्यक्ति प्रिय के न रहने पर भी जी सके। परन्तु सत्य प्रेम के मूर्तरूप महाराज दशरथ हैं। उन जैसा विश्व में कोई सच्चा प्रेमी नहीं हुआ जो प्रेमास्पद के बिना जी न सका हो। वे तो विनम्रता से कह रहे हैं कि मैंने मछली को अपने जीवन का आदर्श माना है-

जियइ मीन बरु बरि बिहीना।

फनि बिनु फनिक जियइ दुःख दीना।।

कहउँ स्वभाव न छल मन माहीं।

जीवन मोर राम बिनु नाहीं।।

आगे माँ कौशल्या जी ने भी भरत से कहा था-

मोहि न लाज निज नेह निहारी।

राम सरिस सुत मैं महतारी।।

लोग कहा करते थे- 'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति' अर्थात् पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाये

पर माता कुमाता नहीं होती' पिता के सम्बन्ध में किसी ने कुछ नहीं कहा। बेटा भरत! तुम्हारे पिता ने सृष्टि के इस नियम को बदल डाला। मेरे समक्ष श्रीराम, सीता और लक्ष्मण तापस वेश में वन जाने को उद्यत हुए परन्तु मैं तो जीती रही किन्तु तुम्हारे पिता न जी सके-

जियइ मरइ भल भूपति जाना।

मोर हृदय शत कुलिश समाना।।

मेरा प्रेम तो झूठा है सच्चा प्रेम तो तुम्हारे पिता का है। इसी प्रकार महाराज जनक जब वनवास में मिलने गये तब जनकजी ने चित्रकूट में कहा था-

शिथिल सनेह गुनत मन माहीं।

आए इहाँ कीन्ह भल नाहीं।।

रामहि राय कहेउ बन जाना।

कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रमाना।।

हम अब वन ते बनहिं पठाई।

प्रमुदित फिरब बिबेक बढ़ाई।।

एक प्रेमी महाराज वे दशरथ और एक प्रेमी अविवेकी मैं हूँ। चक्रवर्ती महाराज पुत्र वियोग में नहीं रह सके। मैं भी तो पिता समान हूँ मैं प्रभु को इस बन में छोड़कर जा रहा हूँ। सत्य प्रेम तो चक्रवर्ती जी का था। मैं समधी नहीं विषमधी हूँ। जनक जी कहते हैं समधी बनकर मैं स्वयं को चक्रवर्ती जी की कोटि में अनुभव कर रहा था। परन्तु जब मिथिलापुरी से सीता विदा हुई तब भी मैं जीवित रहा। मुझे मंत्रियों ने समझाया मैं मान गया। परन्तु क्या चक्रवर्ती जी को महारानी कौसल्या और सुमन्त्र जी ने नहीं समझाया था? क्या वे माने? उनका प्रेम सच्चा था और मेरा प्रेम झूठा है। ऐसा कहकर जनकजी स्वयं को धिक्कार

रहे हैं। वे कहते हैं मेरी तुलना चक्रवर्ती महाराज से नहीं हो सकती। जितना राम प्रेम उनमें था उतना क्या मुझमें है? सभी पिता दशरथ नहीं हो सकते और सभी पुत्र राम नहीं हो सकते तभी तो कहा है-

राम राम सब कोउ कहैं दशरथ कहे न कोय।

एक बार दशरथ कहे जन्म कोटि फल होय।।

महाराज दशरथ की महिमा का वर्णन तो ब्रह्मा जी ने भी मानस की इन पंक्तियों में किया है-

जिनहिं विरचि बड़ भयउ विधाता।

महिमा अवधि राम पितु माता।।

अर्थात् जिनको रचकर ब्रह्मा जी ने भी बढ़ाई पाई तथा जो श्रीराम के माता पिता होने के कारण महिमा की सीमा हैं ऐसे महाराज दशरथ सत्कर्म और सुमंगलों की मूर्ति हैं। राम शिरोमणिकार ने सत्य ही कहा है कि जिनकी गोद में भगवान राम खेले वहाँ काम की कल्पना करना भी महापाप है। जिन दशरथ जी की भुजाओं के प्रताप से इन्द्र प्रसन्न रहते हैं वे चक्रवर्ती क्या काम के प्रताप से डरेंगे? एक बार जब महाराज दशरथ ने शनि पर आक्रमण किया तो शिवजी ने महाराज पर त्रिशूल फेंका वह त्रिशूल भी उनका कुछ न बिगाड़ सका, इन्द्र का वज्र और काली की तलवार भी जिनका कुछ न कर सकी ऐसे महाराज दशरथ क्या पत्नी के क्रोध से सूख जायेंगे? कदापि नहीं। श्रीराम जी के प्राकट्य में दशरथ जी का स्नेह काम कर रहा है। तभी तो मनुशतरूपा प्रसंग में भगवान ने कहा मैं अंशों सहित आपके यहाँ अवतार लूँगा। ऐसे महाराज दशरथ का चरित्र हम सबके लिए आदर्श है। उनमें काम की कल्पना करना महापाप है।

## भगवान् के श्री चरणों में अनुरक्ति ही भक्ति है

□ श्री ललिताप्रसाद बड़थवाल

भगवन्नाम में नामी को प्रकट करने की शक्ति होती है। अतः उठते बैठते सोते जागते जहाँ तक बन पड़े प्रभु नाम जप करते ही रहना चाहिए, यह मानव शरीर इसीलिए कृपा करके प्रभु ने हमें दिया है। सुर दुर्लभ यह मानव शरीर विषय भोगों में नष्ट करने के लिए नहीं है। इस बात का ज्ञान सत्संग के माध्यम से अथवा सद्गुरुदेव की कृपा से ही सम्भव हो पाता है। प्रभु नाम जप अथवा संकीर्तन से जीव को निश्चय ही लाभ मिलता है। चाहे अनचाहे अथवा बिना अर्थ समझे ही वह मुख से उसके नाम का उच्चारण करता रहे तो जैसे अबोध बालक यदि आग में हाथ डालेगा तो जलेगा ही क्योंकि दहन करना अग्नि का स्वभाव है। इसी प्रकार भगवान का स्वभाव भी जीव पर कृपा करना है। जो भी भक्त प्रभु का नाम जाने अनजाने लेते रहते हैं, प्रभु की उन पर असीम कृपा दृष्टि रहती है। अस्तु बुद्धिमान लोग दिन रात मन वचन और कर्म से भगवान का भजन करते रहते हैं और बिना प्रयास के ही संसार सागर को सरलता से पार कर लेते हैं।

यदि हम विचार कर देखें तो संसार में सभी जड़ अथवा चेतन चराचर जीव अमर होना चाहते हैं। पूर्ण ज्ञान, पूर्ण आनन्द, पूर्ण अस्तित्व, पूर्ण शान्ति और पूर्ण स्वतंत्रता का जीवन जीना चाहते हैं। शाश्वत सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं। और ये सभी गुण भगवान में ही निहित हैं। अतः कहना न होगा कि सभी चराचर जीव प्रभु को ही चाहते हैं। वास्तव में जीव का लक्ष्य तो परमानन्द को प्राप्त करना ही है। लेकिन चंचल मन उसे निरर्थक और नश्वर सांसारिक वस्तुओं में उलझा देता है। फलस्वरूप जीव अपने वास्तविक लक्ष्य से भटक जाता है।

अतः यह बात निर्विवाद सत्य है कि शरणागति ही एक मात्र प्रभु को पाने का सशक्त माध्यम है। हमारे गुरुदेव भगवान भी कहते हैं कि सन्त जीव का सुधार करते हैं और भगवान उसका उद्धार करते हैं। उनके शब्दों के बिना सुधार के उद्धार सम्भव ही नहीं है। उनका मानना है कि जब संसार से राग मिटेगा तभी परमात्मा से अनुराग बढ़ेगा। भगवत् प्राप्ति के बाद भी यदि कुछ शेष रह जाता है तो वह है “सन्त दर्शन” इसकी पुष्टि भी मानस की इस चौपाई से सन्त शिरोमणि श्री तुलसीदास जी ने कर दी है— “मोरे मन प्रभु अस विश्वासा। राम से अधिक राम कर दासा।।” इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि नित्य निरन्तर सन्त का संग करने से ही ईश्वर के प्रति अनुराग बढ़ता है और संसार से विरक्ति भी, केवल मन की वृत्तियों को बदलने की आवश्यकता है।

सत्संग अथवा यों कहें कि भगवान का भजन जीव के लिए उसी प्रकार सहायक होता है जैसे अन्धे व्यक्ति को लाठी का सहारा। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि सांसारिक रोग की औषधि ही प्रभु का नाम है। उस अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक परमपिता परमात्मा की अलौकिकता को हमारे ऋषि-मुनियों ने अपने गहन मनन और तप के प्रभाव से देखा है और उन्होंने जैसा देखा है, अनुभव किया है उसको अनेक ग्रन्थों के माध्यम से हमारे लिए धरोहर के रूप में मार्ग दर्शन के लिए छोड़ गए हैं।

श्रीमद्भागवत महापुराण, श्रीगीताजी, श्री रामचरितमानस आदि अनेक ऐसे ग्रन्थ हैं जिनका अध्ययन कर तदनुसार आचरण करने से हमारा मानव शरीर धारण करने का सुफल हमें निश्चय ही प्राप्त हो सकता है। आवश्यकता इन ग्रन्थों में उल्लिखित ज्ञान को अपने जीवन में क्रियान्वित करने की है। केवल कहने सुनने मात्र से बात बनने वाली नहीं है।

□□□



## सीताचरित्रम्

□ आचार्य पं० रमेशचन्द्र शुक्ल

दयामयीं शीलवतीं महोज्ज्वलां।  
 कृपालुरामस्य शुभाम्बुवर्षिणीम्।  
 उदारचित्तां दयितां महीयसीं  
 नमामि सीतां मृदुलां क्षमात्मजाम्॥१॥  
 क्षेत्रं महीपजनको लभते स्म सीतां  
 कन्यां कृषन् परमसुन्दररूपलक्ष्मीम्।  
 क्षोण्युत्थितां नरपतिः सदयो जुगोप  
 सातः सुता सुविदिता प्रथते स्म तस्य॥२॥  
 सीता बभूव जनकस्य मनोज्ञरम्ये  
 श्रेष्ठप्रकृष्टललिते सुषमाभिरामे।

सद्दीप्तभूपभवने परिवर्धमाना  
 शास्त्रेषु सद्गुण-कलासु रता भवन्ती॥३॥  
 श्रेष्ठस्वभावमधुरप्रियशीलहेतोः  
 वात्सल्यपात्रमभवन्नितरां समेषाम्।  
 स्नेहं विदेहभवनं स्वजनाः सदा सा  
 तस्यां भृशञ्च निदधुर्जनता समस्ता॥४॥  
 ज्ञानार्जने निदधतीं हृदयं नितान्तं  
 सीतामवेक्ष्य निशितप्रतिभासुदीप्ताम्।  
 दिव्यस्वरूपगुणमञ्जुलभूषितां तां  
 सर्वेऽपि मोदममितं प्रययुः पुमांसः॥५॥

□□□

## प्रकट भई सीता

□ श्रीविशेषनारायण मिश्र ( संगीत विभाग )

तिरहुत की भूमि फोर प्रकट भई सीता।  
 जलधर बन बरस रहीं प्रेम की प्रणीता॥  
 श्रवणन सुनाय आजु दिशि-दिशि बधाई  
 झूमें आनन्द भरे लोग औ लुगाई।  
 अब तो चित-चेत-चरण सीता पुनीता  
 तिरहुत की भूमि फोर प्रकट भई सीता॥१॥  
 जनक जी किशोरी को अपलक निहारें  
 गोद में उठाय रानी चूमि चुचुकारें।  
 निरखि लोग निसरि गये प्रेम के अतीता

तिरहुत की भूमि फोर प्रकट भई सीता॥२॥  
 ऐसा आनन्द छाया मिथिला के कण-कण  
 श्रुति-शास्त्र-वेद आदि कर ना सकें वर्णन।  
 लेहु लोचननि को लाहु अवसर सुभीता  
 तिरहुत की भूमि फोर प्रकट भई सीता॥३॥  
 सुन्दरी किशोरी को दर्शन शुभकारी  
 मृतक जियावनि लागे मृदुतम किलकारी।  
 हृदय विराजे 'विशेष' भावते भनीता  
 तिरहुत की भूमि फोर प्रकट भई सीता॥४॥

□□□

## मुस्कनियाँ पै बलिहारी जाऊँ मैं

□ डॉ० श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव

भावजगत में ही जीवात्मा अपने मन की बात परमात्मा से कह सकता है और यही अन्तरंगता जीवात्मा के जीवन की उपलब्धि बन जाती है- ऐसी ही उपलब्धियों की धनी डा० श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव अपनी भाभी माँ भगवती जानकी जी की जयन्ती के उपलक्ष्य में एक भावगीत प्रस्तुत कर रही हैं। निश्चित रूप से श्री सीतारामोपासक भक्तों को दिव्यानन्द की अनुभूति होगी। -सम्पादक

अपनी भाभी ( सीता माँ ) की मुस्कनियाँ पै बलिहारी जाऊँ मैं

बलिहारी जाऊँ मैं, वारी वारी जाऊँ मैं, अपनी....

भाभी माँ की केश-राशि में सुन्दर सुमन गुँथे हैं।

जैसे मावस की रजनी में तारक वृन्द सजे हैं।।

कारी घुँघरारी अलकनियाँ पै बलिहारी जाऊँ मैं

वारी वारी .... अपनी ....

भाभी माँ के भाल पै शोभित सुन्दर सेन्दुर बिन्दिया।

जैसे स्वच्छ निरभ्र गगन में सूरज बना टिकुलिया।।

ऐसी चमचम सेन्दुर बिन्दिया पै बलिहारी जाऊँ मैं

वारी वारी .... अपनी ....

बड़ी बड़ी कजरारी अँखियों में कजरे की रेखा।

जैसे चकित मृगी ने छककर रूपराशि को देखा।।

ऐसी अमृतमयी चितवनियाँ पै बलिहारी जाऊँ मैं

वारी वारी .... अपनी ....

सुगढ़ नासिका में हीरे की जगमग करे नथनियाँ।

जैसे घन के बीच मनोहर दमके नवल दमनियाँ।।

ऐसी जगमग जोत नथनियाँ पै बलिहारी जाऊँ मैं

वारी वारी .... अपनी ....

अरुण अधर कोमल कलिका से मञ्जुल और गुलाबी।

नजर उतारे ननद 'वन्दना' तब भाभी मुस्का दीं।।

ऐसी दिव्य मधुर मुस्कनियाँ पै बलिहारी जाऊँ मैं

वारी वारी .... अपनी ....

□□□

## सिख-गुरुओं की श्रीराम-श्रीकृष्ण भक्ति

□ श्री जगदीश प्रसाद गुप्त (जयपुर)

सिख समाज के सभी पूज्य गुरु भगवान श्री राम, श्री कृष्ण के अनन्य उपासक रहे हैं। उनके धर्म में और “साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब” जी में सनातन धर्म की सभी बातों की मान्यता दी गई है। श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी में तो वेद-पुराण-रामायण की बातों की चर्चा श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्रीहरि, श्रीगोविन्द, श्रीनारायण आदि भगवन्नामों के साथ की गई है। सिख धर्म और श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी को मानने वाले सच्चे सिख कभी नहीं कहेंगे कि वे हिन्दू नहीं हैं और श्री दशरथ-नन्दन श्रीराम को, श्री नन्दनन्दन श्रीकृष्ण को नहीं मानते, उनके श्रीराम, श्रीकृष्ण निराकार राम-कृष्ण हैं। हिन्दू धर्म को मानने वाले, दसवें एवं अन्तिम सिख-गुरु, प्रातः स्मरणीय पूज्य श्री गुरु गोविन्द सिंह महाराज ने श्रीभगवती नैना देवी से गौ और हिन्दू धर्म की रक्षा करने की याचना की थी-

यही देहु आज्ञा तुरक को खपाऊँ।

गो घात का दुख जगत् से मिटाऊँ।।

सकल जगत महि खालसा पंथ गाजे।

जगै धर्म हिन्दू सकल भंडभाजे।।

पूज्य श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने रघुवंशी श्रीराम को परम पवित्र अवतारी, दुष्ट-दैत्यों के संहारक और सन्त पुरुषों के प्राणाधार के रूप में देखा है-

राम परम पवित्र हैं रघुवंश के अवतार।

दुष्ट दैतन के संहारक, संत प्राण-अधार।।

पूज्य श्री गुरुनानक देव जी रघुवंशी श्री दशरथ नन्दन श्रीराम के अनन्य भक्त रहे हैं-

१. सूरजवंशी रघु भया रघुकुल वंशी राम।

रामचन्द्र के दोए सुत, लऊ कुश ताहि नाम।।

संग सखा सब तजि गये कोऊ न निबहो साथ।

कहि नानक इस विपत्ति में टेक एक रघुनाथ।।

२. सबसे ऊँच राम प्रकाशा।

निज बासर जप नानकदास।।

३. न ओ भरे न दागे जाहिं।

जिनके राम बसे मन माहिं।।

पूज्य श्री गुरु नानक देव जी के लिए कहा जाता है कि वे बचपन से ही श्रीराम भक्त थे। उनके राम भक्ति के अनेक प्रसंग कहे जाते हैं, सुने जाते हैं-

१. घर वालों ने ऐसे राम भक्ति में लीन रहने वाले बालक (नानक) जो घर का कोई काम नहीं करता था, उसको खेत पर खड़ी फसल पर चिड़ियाँ उड़ाने का काम दिया। सब जीवों में अपने इष्ट देव श्रीराम को देखने वाले उन चिड़ियों में भी अपने प्रभु को देखकर उन्हें उड़ते नहीं और उन्हें खड़ी फसल पर अनाज के दाने खाने देते थे-

रामजी की चिड़िया, रामजी का खेत।

खाओ चिड़िया भर भर पेट।।

२. घर वालों ने खेत पर से हटाकर अनाज तौलने का काम सौंपा। वहाँ पर भी, वे परम्परागत एक बार तौलने पर राम ही राम कहकर भाव-विभोर हो गए, मुख से राम ही राम कहते रहे और आँखें बन्द हो गई।

३. श्रीराम-भक्ति का प्रचार करते हुए एक बार श्रीगुरुनानकदेव जी मक्का-मदीना पहुँचे और रात को एक मस्जिद की ओर पैर करके सो गए। सुबह

होने पर मस्जिद का मुल्ला आया और इन्हें मस्जिद की ओर पैर करके सोते देखकर बड़बड़ाया और क्रोध में बोला- “अबे, खुदा की तरफ पैर करके सो रहा, तमीज नहीं है?” यह पूछने पर “तू है कौन?” श्री गुरुनानकदेव जी ने विचार किया कि वे हिन्दू हैं, हिन्दू कहने पर ये मुल्ला-मौलवी मारेंगे, मुसलमान कहें तो वे मुसलमान हैं नहीं। इसलिए, उन्होंने अपने को पंच-तत्व का पुतला बताकर नानक नाम बताया-

**हिन्दू कहूँ तो मारिये मुसलमान हूँ नहीं।**

**पंचतत्व का पुतला नानक मेरा नांव।।**

मस्जिद के खुदा की ओर पैर करके सोने के उत्तर में, श्रीगुरुनानकदेव जी ने कहा- “खुदा तो सब जगह है, जिधर खुदा नहीं है, उस ओर मुझे कर दे।” क्रोधी मुल्ला ने उनके पैर पकड़ कर दूसरी तरफ किये तो मस्जिद भी उस ओर ही घूम गई, अब जिधर पैर करें, उधर ही मस्जिद हो जाती। श्रीराम भक्त के चमत्कार देखकर सभी मौलवी-मुल्ला घबड़ा गए और उनके श्रीचरणों में गिर गिर कर क्षमा माँगने लगे।

४. काबुल देश में, वहाँ के बाबर बादशाह ने भी गुरुनानकदेवजी का स्वागत किया और एक सोने के कटोरे में भरकर भाँग पीने को दी। वे तो श्रीराम नाम का ही नशा करते थे, अन्य सांसारिक नशों से दूर रहते थे। वे बादशाह को समझाने लगे कि भाँग आदि का नशा, क्या कोई नशा है, ये नशे तो सुबह तक उतर जाते हैं, क्या फायदा है, ऐसे नशा करने से। नशा तो राम नाम का है जो दिन रात चढ़ा रहता है-

**भाँग तंबाकू छोटारा उतर जाय प्रभात।**

**नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।।**

उन्होंने सदैव ही रामनामामृत का पान किया और इसे ही सुख का आधार मानते थे।

**नानक दुखिया सब संसारा।**

**सुखिया वही जो नाम अघारा।।**

श्रीगुरुनानकदेव जी ने “जन्म-सारवी” में गौ-माता की अलौकिक महिमा का वर्णन किया है-

**गऊ चौदवाँ रतन है, कामधेनु तेह नाम।**

**पूजन सब अवतार तिसें करके मात समान।।**

**शीर जिन्हा दा पीजिये तिस मारियाँ बहुत गुनाह।**

**नानक आवे रूकन दीन बहु भुखियाँ होय निबाह।।**

श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब में कबीर, रविदास, नामदेव, धन्ना पीपा, शेख फरीद आदि सन्तों की वाणियाँ हैं और ये सभी सन्त साकार श्रीदशरथ नन्दन श्रीराम और श्री नन्दनन्दन श्री कृष्ण के भक्त थे और उन्होंने उन्हीं के भरपूर गुणगान किये हैं। श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब में श्रीराम-कृष्ण की स्तुति व गुणगान का भक्तिमय वर्णन हमें यही बताता है कि सिख गुरु साकार भगवान राम-कृष्ण के उपासक थे-

**१. धन धन मेघा रोमावली।**

**जहँ कृष्ण ओढ़े कामली।।**

**धन धन वृन्दावना।**

**जहँ खेले श्री नारायण।।**

**२. एक कृष्ण सर्व देवा देव देवात आत्मः**

**आत्मं श्री वासुदेवस्य जेको जानत भेव।**

**नानक ताका दास है सोई निरंजन देव।।**

**आये गोपी, आये कान्हा, आये गऊ चरावे दाना।**

**आप उपावे आप खवावे। तुष लेय नहीं हक तिहा सगा।।**

**३. हरि हरि करत पूतना तरी।**

**बाल घातनि कपटहिं भरी।**

**केसी कंस मथन जिन कीया।**

**जीव दान काली को दीया।।**

**प्रणव नामा ऐसो हरि।**

**जास जपत भय अपदा टरी।।**

इसी प्रकार गुरु ग्रन्थ साहिब में माँ गंगे और श्राद्ध-तर्पण की भी महिमा कही गई है कि कुछ लोग अपने पितरों के लिए चुल्लू भर पानी भी नहीं देते और उस भागीरथ की, जो साक्षात् माँ गंगा को, अपने पूर्वजों का उद्धार करने के लिए, स्वर्ग से पृथ्वी पर लाया था, निन्दा करते हैं-

**आप न देय चुल्लू भर पानी।**

**ते निन्दें जिन गंगा आनी।।**

हमारे सभी सिख गुरु श्रीराम, श्रीकृष्ण नाम की माला जपते थे, गौ-ब्राह्मण के रक्षक और कट्टर सनातन धर्मी हिन्दू थे। वे देव मन्दिरों को मानते और कथा कीर्तन करते थे। पंजाब केसरी महाराजा श्री रणजीत सिंह जी ने अनेक स्थानों में मन्दिर बनवाए और वे बड़े प्रेम से “श्रीरामचरितमानस” सुनते थे। सभी सिख सन्तों ने ईश्वर प्राप्ति का साधन श्रीराम, श्रीकृष्ण नाम का जपना और इनकी भक्ति करना बताया है- ईश्वर, श्रीराम, श्रीकृष्ण एक ही हैं, इनमें कोई अन्तर नहीं है।

इस लेख को विराम देते हुए, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि हम और हमारा सिख समाज चारों युगों (सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग) के इष्ट देवों को एक ही इष्ट भावना से “वाहे गुरु,” “वाहे गुरु,” “वाहे गुरु,” का निरन्तर जप करते हैं, स्मरण करते हैं, ध्यान करते हैं। यह बीज मंत्र है- चार शब्दों से बना है- व, ह, ग, र (वा + हे + गु + रु)। सतयुग के विष्णु भगवान से व, त्रेतायुग के हरि से ह, द्वापर युग के गोविन्द से ग, और कलियुग के मुख्य नाम राम से र। इस प्रकार चारों युगों के प्रभु के नाम- श्रीविष्णु, श्रीहरि, श्रीगोविन्द और श्रीराम, के एक एक अक्षर लेकर बीज मंत्र “वाहे गुरु” की रचना हुई है। इससे साकार प्रभु के नामों का सतत जप-स्मरण-ध्यान बनता है- वाहे गुरु, वाहे गुरु, वाहे गुरु। वाहे गुरु जी का खालसा, वाहे गुरु जी की फतह, सत श्री अकाल।

□□□

### पूज्यपाद जगद्गुरु जी के आगामी कार्यक्रम

□ प्रस्तुति-पूज्या बुआ जी

दिनाङ्क	विषय	आयोजक तथा स्थान
०१ मई २००९ से ०७ मई २००९ तक	श्रीरामकथा	कैलाशनगर तह०- बगहा, पश्चिम चम्पारण (बिहार)।
१० मई २००९ से १६ मई २००९ तक	श्रीमद्भागवतकथा	श्रीनरसिंह मन्दिर, जिला- बालाँगीर (उड़ीसा)।
२४ मई २००९ से १ जून २००९ तक	श्रीरामकथा	झिलमिल कालोनी श्रीरामरामेश्वर मन्दिर दिल्ली।
१८ जून २००९ से २६ जून २००९ तक	नवदिवसीय श्रीमद्भागवतकथा	श्रीलक्ष्मीनारायण मन्दिर, सिंगापुर।

**व्रतोत्सवतिथिनिर्णयपत्रक**  
**वैशाख शुक्लपक्ष/सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु**

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	व्रत पर्व आदि विवरण
द्वादशी	बुधवार	हस्त	6 मई	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	गुरुवार	चित्रा	7 मई	श्रीनृसिंह जयन्ती
चतुर्दशी	शुक्रवार	स्वाति	8 मई	श्रीसत्यनारायण व्रत कथा
पूर्णिमा	शनिवार	विशाखा	9 मई	श्री बुद्ध पूर्णिमा

**ज्येष्ठ कृष्णपक्ष/सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु**

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	व्रत पर्व आदि विवरण
प्रतिपदा	रविवार	अनुराधा	10 मई 2009	—
द्वितीया	सोमवार	ज्येष्ठा	11 मई	श्रीनारद जयन्ती
तृतीया	मंगलवार	ज्येष्ठा	12 मई	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
चतुर्थी	बुधवार	मूल	13 मई	—
पंचमी	गुरुवार	पू०षा०	14 मई	वृष राशि में सूर्य संक्रान्ति दिवस
षष्ठी	शुक्रवार	उ०षा०	15 मई	—
सप्तमी	शनिवार	श्रवण	16 मई	—
अष्टमी	रविवार	घनिष्ठा	17 मई	पंचक प्रारम्भ 7/56 से श्रीदुर्गाष्टमी
नवमी	सोमवार	शतभिषा	18 मई	—
दशमी	मंगलवार	पू० भाद्र०	19 मई	—
एकादशी	बुधवार	उ० भाद्र०	20 मई	<b>अपरा-एकादशी व्रत (सबका)</b>
द्वादशी	गुरुवार	रेवती	21 मई	पंचक समाप्त 11/52 रात को
त्रयोदशी	शुक्रवार	अश्विनी	22 मई	प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	शनिवार	भरणी	23 मई	—
अमावस्या	रविवार	कृतिका	24 मई	वटसावित्री व्रत

**ज्येष्ठ शुक्लपक्ष/सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु**

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	व्रत पर्व आदि विवरण
प्रतिपदा	सोमवार	रोहिणी	25 मई	चन्द्र दर्शन
द्वितीया	मंगलवार	मृगशिरा	26 मई	—
तृतीया	बुधवार	आर्द्रा	27 मई	महाराणाप्रताप जयन्ती, श्रीगणेश चतुर्थी
चतुर्थी	बुधवार	आर्द्रा	27 मई	चतुर्थी तिथि का क्षय
पंचमी	गुरुवार	पुनर्वसु	28 मई	—
षष्ठी	शुक्रवार	षुष्य	29 मई	—
सप्तमी	शनिवार	श्लेषा/मघा	30 मई	—
अष्टमी	रविवार	पू०फा०	31 मई	श्रीदुर्गाष्टमी
नवमी	सोमवार	उ०फा०	1 जून	—
दशमी	मंगलवार	हस्त	2 जून	श्रीगंगादशहरा
एकादशी	बुधवार	चित्रा	3 जून	<b>निर्जला एकादशी व्रत (सबका)</b>